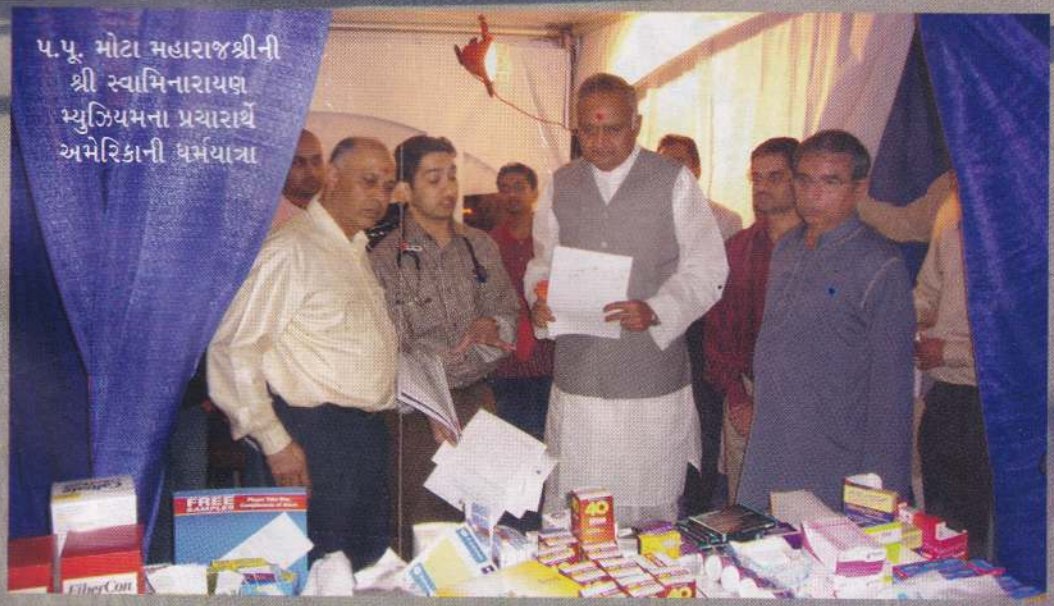
SHREE SWAMINARAYAN
શ્રી સ્વામિનારાયણ

Rs. 5/-

JUNE '06





પ્રકાશક:- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



जुना अरोडा (इडरदेश) मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



शिरोही में सभा में दर्शन देते हुए प.पू. महाराजश्री ।



हीरावाडी बापुनगर सत्संग सभा में दर्शन देते हुए प.पू. महाराजश्री ।



शिरोही (राज.) मंदिर में ठाकुरजी का पाटोत्सव अभिषेक करते हुए महाराजश्री ।



लालोडा मंदिर के सुवर्ण जयंती महोत्सव के अवसर पर यज्ञ विधि में प.पू. महाराजश्री ।



लालोडा (इडर देश) मंदिर की सुवर्ण जयंती पर ठाकुरजी का पाटोत्सव अभिषेक करते हुए प.पू. महाराजश्री ।



लालोडा में कथा श्रवण करते हुए भक्तजन ।



लालोडा मंदिर के महंत स्वामी का सन्मान करते हुए प.पू. महाराजश्री ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

SHREE SWAMINARAYAN श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ५ जुन -२००६

अ नु क्र म णि का

१. अरमदीयम २

२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा ३

३. श्री स्वामिनारायण म्युझियम, अहमदाबाद के लाभार्थ ५
प.पू.बडे महाराजश्रीका USA धर्मप्रवास

४. श्रीहरि के छट्ठे वंशज प.पू. बडे महाराजश्री के सांनिध्य में ७
पवित्र कैलाश मानसरोवर यात्रा

५. 'शतंजीवेम् शरदः' ८

६. माहात्म्य ज्ञान के साथ निश्चय ११

७. कल्याण के दाता धर्म वंशी १३

८. सत्संग सुरभि : सुरवी तो थे अब और सुरिवया हो गये १४

९. सत्संग बालवाटिका १५
(१) चींटी को कन हाथी को मन
(२) एक घडी आधी घडी

१०. भक्तिसुधा १८
(१) माताजी (जमकुबाई) (२) मेरे गरीब नेवाज
(३) जीजी बाई (४) सत्यज्ञान

११. समाचार वृत्तांत २१

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

अस्मंदीयम् तन्त्रीश्री की तरफ से.....

अपना भारत देश कृषिप्रधान, आर्थिक व्यवस्था तथा धर्मप्रधान-समाज व्यवस्था से सस्पृक्त अखंड भारत वर्ष के नाम से प्रसिद्ध है । वर्ष की छ ऋतुओं में वर्षाऋतु आने के साथ समग्र देश के लोगो में जिस प्रकार का आनन्द होता है, उसी प्रकार भगवत् भक्त भी इस ऋतु के प्रारम्भ होने के साथ चातुरमास में विशेष नियम को धारण करके आत्यन्तिक मोक्ष प्राप्त करने तक दिव्य आनंद में डूब जाते हैं । श्रीहरि की पराभक्ति करने के लिये विविध प्रकार के शास्त्रों में वर्णित नियमो को धारण करने के लिए पूज्य आचार्य महाराजश्री के पास से या किसी संत के पास जाकर नियमधारण करके भक्ति करनी चाहिए । भगवानने शिक्षापत्री में कहा है कि - "विशेष नियमो धार्यः चातुर्मासेऽखिलैरपि" । किसान जिस प्रकार अपने खेत को ताजा एवं स्वक्ष बनाता है, उसी प्रकार भक्त अपने जीवन को व्यसन तथा आलस्य से रहित होकर, कुसंग को त्याग कर, निरामय होकर जीवन में परमेश्वर की पराभक्तिस्मी वीज को बोता है, जिसमें से एकांतिक भक्तिस्मी अकुंर फूट पडता है और उसी में से आत्यंतिक मोक्षस्म महाफल की प्राप्ति इस जीव को होती है । तभी जन्ममृत्यु के भवरोग से छूटना संभव हो सकता है । इसलिये किसान जैसे सुन्दर खेत तैयार करके उसमें उत्तम फल की प्राप्त्याशासे बीज ववन करता है ठीक वैसे ही मोक्षाभिलाषीजीव को उत्तमफल अर्थात् मोक्ष प्राप्ति के लिए चातुरमास स्मी खेत में नियम स्मी बीज का ववन करलेना ही मनुष्यजीवन की सार्थकता है ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

- *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

मई -२००६

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर मेमका (मूलीदेश) बहनो के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

२. अरोडा (इडर) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

३-४. दयापर (कच्छ) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

५. श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा (ता. इडर) सुवर्ण जयंती महोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

६-७. नारायणपर (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

८. माणसा गाँव में प.भ. पटेल अंबालाल जोईताराम के यहाँ पदार्पण ।

९. देवपुरा (ता. विरमगाँव) पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री नरनारायण यु.मं. हीरावाडी बापूनगर सत्संग सभा में पदार्पण ।

१०. रिद्रोल गाँव में पारायण प्रसंग पर पदार्पण । वहाँ से मोटेरा श्री महेन्द्रभाई केशुभाई पटेल के यहाँ पदार्पण। जेतलपुर श्री विष्णुभाई आशाराम रावल के यहाँ यज्ञोपवीत प्रसंग पर पदार्पण ।

११. श्री स्वामिनारायण मंदिर डुंगरी (इडर) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।
कानपुर हाला गाँव में प.भ. बलदेवभाई कोदरभाई के यहाँ लग्न प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण ।

१२. विहार गाँव में श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों के) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१४. सरदार नगर (नवुं सरवड, ता. माणिया मीयाणा) मूली देश - श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१६. विसनगर प.भ. कांतिभाई रणछोडदास पटेल के यहाँ पदार्पण ।

१७ से १९ तक सुखपर (कच्छ) श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

२० देलवाडा (विजापुर) गाँव में श्री कष्टभंजन हनुमानजी के प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

२१. जीवापर (जोडिया) मूलीदेश श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

२२ से २५. स्टेनमोर (यू.के.) श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

२७. जामसर (हालार -मूलीदेश) श्री हनुमानजी महाराज के प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

२८. देउसणा (ता. कडी) मंदिर में आरती उतारने हेतु तथा प.भ. भक्तिभाई भोलाभाई पटेल के यहाँ पदार्पण । लौटते समय प.भ. रतीभाई खीमजीभाई पटेल (मेडावाला) स्कीम कमीटी मेम्बरश्री) के मास्तिनन्दन विहार में पदार्पण, बोपल रींग रोड ।

२९. प्रांतीज श्री स्वामिनारायण मंदिर शताब्दी पाटोत्सव पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

३०. नारायणपुरा (कडी) मंदिरमें कथापारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

३१. डांगरवा गाँव में प.भ. मुकेशभाई जोईताराम पटेल के यहाँ वास्तुपूजन प्रसंग पर पदार्पण ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम, अहमदाबाद के लाभार्थ प.पू.बडे महाराजश्रीका USA धर्मप्रवास

- प्रहलादभाई वि. पटेल (न्युजर्सी)

सर्वावतारी सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण महाप्रभु के संबन्ध को प्राप्त की हुई कल्याणकारी, अमूल्य, चमत्कारी प्रसादी का संग्रहस्थान अर्थात् - प.पू. श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के दिव्य संकल्प से साकार ले रहा "श्री स्वामिनारायणा म्युझियम" केवल १५ दिन के अल्प समय में २५००० मील की यात्रा में अमेरिका के दक्षिण भाग से प.पू.ध.धु. १००८ निवृत्त आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा छपैया के पूर्व महन्त शा.स्वामी हरिकृष्णदासजी, स्वामी देवप्रकाश-दासजी, पर्सनल सेक्रेटरी, संदीपभाई शेठ यू.एस.ए. के न्युजर्सी से प्रहलादभाई पटेल, ठाकोरभाई पटेल, हेमेन्द्रभाई मोरडीया, महेशभाई पटेल, बोस्टन से संजय पटेल, वाशिंग्टन से कनुभाई पटले शिकागो से जयंतीलाल पटेल डिट्रोईट से कांतिभाई पटेल इत्यादि जन यात्रा में संमिलित हुए थे ।

विहोकन मंदिर, न्युजर्सी : प्रवास का शुभारम्भ २२ अप्रैल शनिवार को प.पू.ध.धु. निवृत्तचार्य श्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के ६२ वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में मंदिर, चेरीहिल मंदिर, पारसीपती तथा न्यूयोर्क के चारोतरफ से हरिभक्त विहोकन मंदिर में पू. महाराजश्री के प्राकट्योत्सव पर पधारे हुए थे । प्रासंगिक सभा में संतो का प्रवचन तथा पू. महाराजश्री के आशीर्वाद के बाद श्री सौम्यकुमार श्री सुव्रतकुमार तथा श्री प्रफुल्लकुमार पू. दादाजी के ६२ वें जन्मदिन पर केक काटकर सर्वोपरि श्रीहरि की जयबोलकर श्री स्वामिनारायण म्युझियम के फंड की चर्चा की गयी ।

पू. महाराजश्रीने जिस विहोकन में मंदिर की प्रथम स्थापन की थी उसकी भेंट अधिक थी ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर फ्लोरिडा : ता. २३ अप्रैल रविवार को प.पू. महाराजश्री संत-हरिभक्तों के साथ फ्लोरिडा लेकलेन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर में पधारे थे । हरिभक्तों ने तथा बहनोने गाने के साथ भव्य स्वागत किया था । सायंकाल भव्य सभा में शा.स्वा. हरिवल्लभदासजी तथा शा. हरिकृष्णदासजीने सुंदर प्रवचन में म्युझियम का महात्म्य समझाया था । पू. महाराजश्री ने सभी को अलौकिक आशीर्वाद दिया । हरिभक्त तीन दिन तक अपने घर पदार्पण कराकर म्युझियम के लिए सुंदर भेंट अर्पण किये थे ।

ISSO मीडल ज्योर्जिया (बायरन-मेकन) ता. २६ अप्रैल बुधवार को पू. महाराजश्री वायरन पधारे। श्री नवीनभाई पटेल (मोखासण) के यहाँ निवास किये । श्री दशरथभाई, श्री जयेन्द्रभाई तथा श्री जयन्तीभाई, रसिकभाई, श्री अश्विनभाई, श्री दिनेशभाई, श्री भरतभाई सभी हरिभक्तों के सहकार से मेकन शहर में नवीन निर्मित उमिया माता के मंदिर में सुंदर सभा का आयोजन किया गया था । पू. संत तथा पू. महाराजश्री ने आशीर्वाद देकर मंदिर में आरती उतारकर तीन दिन तक कार्यक्रम में हरिभक्तों के अति आग्रह पर पदार्पण करके म्युझियम के लिए सभी ने अपना योगदान लिखवाया था । सर्वोपरि श्रीहरिकी कृपा से तथा पू.म हाराजश्री के दिव्य प्रभाव से हरिभक्त अपनी ISSO की संस्था में जुडकर एक नये चेप्टर्स ISSO मीडल ज्योर्जिया (बायरन-मेइन) की स्थापना हुई । वहाँ के मुख्य हाईवे पर सुंदर शांत रमणीय विस्तार में अपने मंदिर के १८ एकड जमीन में प.पू. महाराजश्री पदार्पण करके खूब प्रसन्न हुए - जिस के चरण रज से वह भूमि पावन हो गयी । वही पर प्रथम मंदिर निर्माण का संकल्प करके ISSO कमेटी को तत्काल सूचित करके आगे की कार्यवाही हेतु कार्यभार देदिया गया ।

ISSO एटलान्टा : ता. २७ अप्रैल शनिवार को पू. महाराजश्री एटलान्टा पधारे । ता. ३० रविवार को गुजराती समाज के विशाळ होल में सुंदर सभा का आयोजन किया गया । विशाल संख्या में हरभक्तों ने पू. महाराजश्री का दर्शन किया और अपने घरों में पदार्पण करवाया । रोम सीटी में पदार्पण कराकर एक सुंदर होल में सभा का आयोजन किया गया । एटलान्टा में भी हरिभक्त पू. महाराजश्री से आकृष्ट होकर मीटींग करके ISSO एटलान्टा की नये चेप्टर्स की पू. महारजश्री ने स्थापना की । स्वयं भगवान के पुत्र तथा उन्हीं के अपर स्वरूप स्वयं इस कार्य में लगे हो तो वह स्वंय सर्वोपरि हो जाता है । इसी प्रकार एक चर्च के लिए अचानक एक रीया लेटर्स का फोन आया वह जगह महाराजश्री को खूब पसन्द आ गयी और हरि भक्तों को वह जगह खरीदने की आज्ञा करके कोंट्राक्ट भी कर दिये । इस प्रकार इस

धर्मयात्रा में पू. महाराजश्री ने दो नये ISSO चेप्टर्स की स्थापना करके तथा नये दो मंदिरो का श्री गणेश किया। श्री प्रवीणभाई दक्षेशभाई, अशोकभाई, राजेशभाई, अल्पेशभाई, सुरेशभाई आदि उत्साही हरिभक्तों ने म्युझियम के लिए खूब मेहनत किये और खूब योगदान भी किये।

बर्मिंगहाम - हंटसवील (अलाबामें) : ता. ३, ४ मई को हन्टसवील अलाबा में पू. महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे। वहाँ कल्पेशकुमार के यहाँ रहने की व्यवस्था की गयी। ता. ४ मई गुरुवार को सायंकाल हिन्दु टेम्पल में सभा का आयोनज किया गया था। कितने ही हरिभक्तों के घर पदार्पण भी किये थे। सभी ने म्युझियम के लिए उदारभाव से दान दिया।

नेशवील : ता. ५ मई को पू. महाराजश्री मोखासण के श्री सोमाभाई पटेल की रमाडा मोटेलमें पधारे थे। वहाँ भी कान्फरेन्स होल में सभा का आयोजन किया गया। वहाँ से दूसरे दिन नेशविल में श्री जयंतीभाई पटेल के यहाँ रुके थे। सायंकाल गुजराती समाज के विशाल होल में ४०० से भी अधिक हरिभक्तों की विशाल सभा में पू. महाराजश्री का दर्शन तथा संतो की अमृतवाणी का सभी हरिभक्तों को लाभ मिला था। वहाँ के हरिभक्तों ने म्युझियम के लिये खूब उदार भाव से भेटं लिखाया था।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया (न्युजर्सी) : ता. ७ मई रविवार को मंदिर में पू. महाराजश्री के दिव्य सभा का आयोजन किया गया था। स्वा. देवप्रसाददासजी (महंत स्वामी)ने वहाँ के हरिभक्तों को पहले से ही म्युझियम का महात्म्य समझाकर फंड के लिए प्रेरणा की थी। सभा में प्रवचन के बाद पू.महाराजश्री ने आशीर्वाद देते हुए कहा कि जब आचार्यपद पर थे तब मंदिर बनाने का खूब आग्रह था। अब हमारी नजर के सामने भगवान स्वमिनारायण एवं म्युझियम दो ही दिखाई देते है।

केवल दो हप्ते के थोडे समय में धर्म प्रवास दरम्यान हरिभक्तों को प्रसन्न करके - प्रत्येक के घर पदार्पण करके उनके मनोरथ संकल्प को पूरा करके श्री स्वामिनारायण म्युझियम का प्रचार प्रसार करके सभी हरिभक्तों को हार्दिक आशीर्वाद देकर स्वदेश-आगमन किये।

Nilkanth

He moves in the cool, clear waters of this mountain stream.
He is the sunlight that reflects like flawless diamonds
Upon the face of these flowing waters.
He is the pure gold hue that fills
This morning air with a fresh sweet taste.
He is the leaf that drinks of his nourishing life force.
And I am the seer who beholds the waking vibration
Of the taintless Sushumna - the life current.
I am carried quietly, gently, deeply in this river of life,
Away from the entanglements of flesh,
Away from all that is unattainable of this Earth,
To the shores of blessedness in spirit.
And I sit here in this moment,
Upon this altar of God,
Where the azure sky and the flowing pure waters meet
And I am immersed in His divine presence

गेरीब्रोकन नामक अमेरिकन प.पू. बडे महाराजश्री का दर्शन होने से प्रभावित हो गया जिससे वह सम्पर्क में रहने लगा, परिणामत: मूल सर्वोपरि श्री स्वामिनारयण संप्रदाय का ज्ञान प्राप्त हुआ। अभी वह उत्तर केरोलिना के पहाडी प्रदेश में एक झरना के पास खड़ा था उसी समय उसे एकाएक वनविचरण करते हुए नीलकंठवर्णी का स्मरण हो आया, जिससे उसी स्वस्थ के दर्शन का अनुभव होने लगा। परिणामत: उसी नीलकंठवर्णी के भावात्मक काव्य लिखने की स्फुरणा हो गयी।

अमेरिका में वर्षो से रहते हुए श्री नलिनभाई जोषी के परिवार के साथ २० वर्ष से संपर्क में ग्रीब्रोक नामक अमेरिकन नागरिक को अपना मूल संप्रदाय तथा श्री नरनारयणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कुछ वर्ष पूर्व दर्शन मुलाकात से वह खूब प्रभावित हो गया। उसी समय से वे एक अच्छे सत्संगी की तरह जीवन व्यतीत करते है। और जब भी प.पू. बडे महाराजश्री अमेरिका पधारते तब अचूक वे दर्शन अवश्य करते हैं। इसी प्रकार अपने उत्सव प्रसंग में भी आर्थिक योगदान विना भूले करते है। वे प.पू. आचार्य महाराजश्री की षष्टिपूर्ति महोत्सव में एक हरिभक्त की तरह आर्थिक सेवा नोंट करवाये थे। वर्तमान में श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण हेतु भी अपना कीमती योगदान भेंट में दिये हैं। सही रूप में इस गोरे नागरिक को धन्यवाद है जिसने थोडे समय की भेंट में पू. धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री में कोई अद्‌भुत दर्शन का लाभ लिया हो। अन्यथा अमेरिकन गौरी प्रजा अपना आश्रित कैसे बन सकती है। इन्हें कितना भी समझाया जाय तो भी यहाँ की संस्कृति से जुडना कठिन है, असंभव को संभव किया गया है।

६ ❋❋❋



'शतंजीवेम् शरदः'

(आरोग्य विषयक धारावाहिक ज्ञान)

(आई एस.एस.ओ. सेवा सर्वीग ह्युमानीटी के हेल्थ ब्रोशयर में से)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की प्रेरणा से तथा प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर I.S.S.O.के उत्साही युवा कार्यकर्ताओं ने करीब छ महीने "सेवा" नामक सामाजिक सेवा प्रवृत्ति का अभियान प्रारम्भ किया है । जो प्रत्येक महीने के दूसरे तथा चौथे रविवार को अमेरिका के अलग-अलग राज्यों के मंदिरो में फ्री मेडिकल कैम्प का आयोजन करते है । जहाँ पर पूर्व में सभी को सूचित कर दिया जाता है, जिससे इसका सभी को लाभ मिल सके । वहाँ पर सुप्रसिद्ध विविध रोगों के डॉक्टरों की टीम अपने नियत समय पर उपस्थित हो जाती हैं । इस प्रकार "सेवा" संस्था द्वारा मेडीसीन तथा अन्य आवश्यक वस्तुयें विनामूल्य दी जाती है । इसका लाभ सैंकडो लोगों को मिलता है । प.पू. बडे महाराजश्री तथा श्रीनरनारयणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री इस कार्य की प्रगति के लिए सतत प्रयत्न शील रहते हैं। "सेवा" नामक इस संस्था का प्रचार हो इसलिए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से इसे प्रकाशित किया जा रहा है । जिसमें प्रत्येक रोगो का कारण तथा निदान I.S.S.O. द्वारा इस "सेवा" संस्था की प्रवृत्ति का सुन्दर ज्ञान तथा निष्णात डाक्टरो के अभिप्रायों को चित्र के साथ प्रकाशित किया गया है । विश्व के अनेक देशों में "डायाबीडीस" के रोगियों की संख्या करोडो मैं है । जिसके लिए अपनी "सेवा" को सोविनयर में से डायाबीटीस का सरल उपचार नामक लेख यहाँ अपनी पत्रिका में प्रकाशित किया गया है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराश्री की आज्ञा से क्रमशः अपने इस अंक में "सेवा" की विशेष प्रवृत्ति प्रकाशित की जायेगी ।

डायाबीटीस, उसकी व्यापकता तथा प्रभाव :

मधुप्रमेह का यह पुराना रोग शरीर में इन्स्युलीन का उत्पादन या उपयोग के अनियमित होने पर होता है । इन्स्युलीन नामक यह तत्व शक्कर स्टार्च तथा अन्य भोजन दैनिक जीवन की शक्ति (उर्जा) के रूप में बदलता है । जिन्हे डायाबीडीस होता है उनमे शर्करा की मात्रा बढ जाती है । अमेरिका में डायाबीटीस के कारण अपंगता या मृत्यु का प्रमाण अधिक है । अमेरिका में एक वर्ष में ९७ अबज डोलर खर्च करके इस बिमारी को रोकने का प्रयास किया जाता है। मृत्यु के लिए सात कारणों में एक कारण डायाबीटीस भी है । एशियन तथा पेसीफीक टापुओं के अमेरिकनो के मृत्यु के लिए पांचवा कारण इसे माना गाय है ।

इस बिमारी के कारण जीवन की गुणवत्ता का नाश हो जाता है । जिससे स्वास्थ्य उत्तरोत्तर बिगडता ही जाता है । जैसे कि अंधा होजाना, किडीनी की असाध्य बिमारी, नसो के रोगो से पैर में कमी आजाना । डायाबीटीस के कारण हृदयरोग तथा कार्डियो वस्क्युलर रोग से अकाल मृत्यु हो जाती है ।

कितने एशियन पेसेफिक टापुओंके अमेरिकनो को यह रोग है इस का प्रचार थोडे पैमाने में है। दूसरे प्रकार का डायाबीटीस बडी तेजी से कुछ वस्तियों में फैलता है । जैसे सिएट में रहने वाले जापानीज अमेरिकन लोगो में यह रोग अन्य की तुलना में दो से तीन गुना अधिक है। हवाई के मूल निवासियों में इसका प्रमाण लगभग अढाई गुना है ।

डायाबीटीस का प्रकार : १ : तरुण मधुप्रमेहमें शरीर की रक्षणव्यवस्था स्वयं इन्स्युलीन बनाने वाली पेन क्रियास के कोषो को नष्ट करती है । अथवा इन्स्युलीन को पचाने का कार्य नही हो पाता है । ऐसा रोगी प्रतिदिन जीने के लिए इन्स्युलीन का इन्जेक्शन लेता है । इस प्रकार के मधुप्रमेह का प्रमाण

एशियन तथा पेसिफिकटापुओं के अमेरिकनोंमे बहुत कम है ।

प्रकार : २ : यह मधुप्रमेह प्रौढवय के लोगों को प्राय: होता है। शरीर पूर्ण रूप से इन्स्यूलीन नहीं पाती है। इसके अलावा बनाये हुए इन्स्यूलीन को पचा भी नही पाती। प्राय: यह रोग चालिस वर्ष से उपर वालों को होता है। पीछे के वर्षो में तरुणों को भी यह रोह ग्रसित किया है। यह रोग एशियन, अमेरिकन तथा पेसिफिक टापुओं के अमेरिकनों में देखा जाता है।

गेस्टेशनल डायाबीटीस :

यह रोग सगर्भावस्था में देखा जाता है। सगर्भावस्ता पूर्ण होने पर यह रोग दूर हो जाता है। परंतु जिन स्त्रियों को सगर्भावस्था में यह रोग हो गया है उन्हें दूसरे प्रकार के डायाबीटीस के रोग की संभावना रहती है।

डायाबीटीस के लक्षण :

डायाबीटीस के लक्षण थोडे समय में दिखाई देने लगते है । प्यास, पेशाब की अधिकता, सतत भूख, बजन में कमी दृष्टि में झांखापन, थकान इसके लक्षण हैं ।

प्रकार-१ : के मधुप्रमेह का निदान तथा उपचार जल्दी न होतो रोगी मूर्च्छा की स्थिति में पहुंच सकता है।

प्रकार-२ : के मधुप्रमेह के लक्षण कुछ समय बात दिखाई देते है । थकान, अस्वस्थता, असमान्य प्यास, अधिक मात्रा में मूत्र त्याग, वजन घटना, दृष्टि में झांखापन, चोट सूजन में समय लगना इत्यादि ।

डायाबीटीस का निदान : रोगी के रक्त का परीक्षण करके रक्त में शर्करा की मात्रा निश्चित की जाती है । परीक्षण करने से पूर्व आठ घन्टे तक भोनज नहीं दिया जाता। उपवास के समय रक्त में शर्करा का प्रमाण १२६ मी.ग्रा./लि. अथवा अधिक होतो उसे डायाबीटीस है ऐसा कहा जा सकता है ।

प्रकार-२ : डायाबीटीस होने की सम्भावना :

कुटुम्बमें यह रोग हो तो, शरीर बहुत मोटी हो, अधिक चर्बी हो, भोजन असंतुलित हो, निष्क्रियता भी कारण है । डायाबीटीस अधिक मीठाई खाने से या शर्करा युक्त आहार खाने से नहीं होता । जो एशियन, अमेरिकन तथा पेसेफिक टापुओं के रहनेवाले हैं चर्बीयुक्त आहार खाने वाले हैं, कार्बोहाईट्रेरस लेने लगे हैं तथा जो शारीरक श्रम छोड़ दिये है, उन सभी को डायाबीटीस होने की संभावना है ।

दूसरे प्रकार का डायाबीटीस रोका जा सकता है क्या ?

हाँ रोका जा सकता है। मधुप्रमेह रोकने का कार्यक्रम । नेशनल इन्स्टीट्यूट ओफ हेल्थ संशोधन में बताये गये नियमानुसार आहार नियमन से वजन घटाया जा सकता है। जिससे बिमारी रुक सकती है । ५८% प्रतिशत लोगों में यह रोग होने पर भी उपरोक्त कार्यक्रम करने से रोग को रोका जा सकता है ।

डायाबीटीस का नियम :

इस रोग का नियमन स्वयं करना चाहिए । इस प्रकार के रोगियो कों चाहिए कि वे स्वयं अंदर की शर्करा का प्रमाण बनाए रखें उसका उत्तर दायित्व समझकर प्रयत्नशील रहें ।

एक - प्रकार का मधुप्रमेह :

इस रोग को रोकने के लिये इन्स्युलीन का इन्जेकशन लेना चाहिए। परहेज का पालन अवश्य करना चाहिए । सुनियोजित आहार, शारीरिक सक्रियता, रक्त में शर्करा का प्रमाण तथा स्वयं उसका निरीक्षण इसके साथ नियमित इन्स्युलीन लेने का समावेश होता है ।

द्वितीय प्रकार का मधुप्रमेह :

का नियमन करने के लिए सुयोजित आहार, शारीरिक सक्रियता शर्करा के प्रमाण का स्वयं निरीक्षण, नियमित दवाई का सेवन, नियमित इन्स्युलीन इन्जेकसन लेने से रोग को रोका जा सकता है । इस प्रकार के रोगी ४०% होते है, इसके लिये नियमित इन्स्यूलीन का इन्जेकशन लेना हितावह है ।

संशोधन :

अभ्यास द्वारा सिद्ध हुआ है कि जो लोग रक्त में शर्करा का प्रमाण सामान्य मर्यादा में रखते है, उन्हें आंख का रोग, किडनी का रोग, ज्ञानतंतुओं का रोग नहीं होता है, या रक्षण मिलता रहता है । लंबे समय तक डायाबीटीस को कन्ट्रोल में रखने से अन्य रोगों को कन्ट्रोल में रखा जा सकता है ।

रक्तशर्करा को मांपने का सरल उपाय है (ए-१-सी) परीक्षण । (ए-वन-सी टेस्ट) यह एक सरल परीक्षण है । इस में तीन महीने में शर्करा का प्रमाण मापा जाता है। डाटाबीटीस के

जुन-२००६ ❋❋❋

माहात्म्य ज्ञान के साथ निश्चय

- पटैल गांडाभाई मोहनलाल (कोल्हापुर)

सामान्य ढंग से मनुष्य को संसार में खुब निश्चय हो जाता है । जिस कारण से वह एक दूसरे के सहारे से व्यवहार करता है । और अपने जीवन को उत्तम ढंग से जीता है । इस संसार का निश्चय करानेवाले प्रथम तो माता-पिता होते हैं जिनके प्रारम्भ से ही यह तुम्हारी माता यह तुम्हारे बाप,दादा-दादी, काका-काकी, मामा-मामी, बहन-भाई, सम्पत्ति खेत, मकान, मिलकत, इत्यादि सांसारिक जो भी पदार्थ है उनका ज्ञान भी इन्ही से होता है । इसी कारण उस अल्प बुध्धि बालक को इसी में निश्चय हो जाता है जगत को मायिक निश्चय करानेवाले भी मायिक ही होते है ।

निश्चय तो बुध्धि से होता है जिस में बुध्धि न हो वह निश्चय कैसे कर सकता हैं पशु पक्षियो मे बुध्धि का अभाव होता है जिससे उनमे निश्चयात्मक ज्ञान नही हो पाता है जैसे गाय भैस या अन्य प्राणी किसी को बेच देने पर उसी के हो जाते है अपना मायिक संबन्ध पूरा हो जाता है अपने बच्चे को बडे हो जाने पर भूल जाते है पक्षी जब तक नीड मे रहते है तब तक लालन पालन करते है जब पंख हुआ तब उड जाते है - बाद में तो उनकी दुनिया ही अलग हो जाती है । मात्र मनुष्य ही मायिक निश्चय के कारण जीवन पर्यन्त सुखी या दु:खी होता रहता है ।

वैसे तो भगवान ने मनुष्य के ऊपर कृपा करके बुध्धि दिया है वह इसलिये कि भगवतमय बुध्धि होसके लेकिन वह तो अपनी बुध्धि को मायिक पदार्थों में लगा दिया है श्रीजी महाराज ने कुशाग्र बुध्धिवाले को मूर्ख कहा है । परंतु जिसने थोडा भी भगवान में निश्चयात्मक बुध्धि किया उसी को बुध्धिमान कहा है ।

इसी विषय पर वचनामृत मे दृष्टांत देते हुए कहते है कि गायकवाड सरकार का दिवान जो संम्पूर्ण राज्यकार्य चलाता था वह अपनी बुध्धि का उपयोग मोक्ष के लिये नही किया बल्कि भगवान के विरोध में भगवान का द्रोह किया । इसी लिये उसे मूखँ कहा । उसी बडौदा मे एक मूखँ नाथ भक्त जो कभी पढा ही नही था लेकिन भगवान को पहचानने यथार्थ प्रयत्न किया । भगवान के महा ज्ञान में निश्चात्मक बुध्धि थी जिससे श्रीजी महाराज ने मूखँ नाथ भक्त को कुशाग्र बुध्धि कहां ।

इस प्रकार आध्यात्मिक मार्गं में बुध्धि का मापदंड अलग है जो भगवान को पहचानने मे मोक्ष प्राप्ति में अपनी बुध्धि लगाये वही कुशाग्र बुद्धि है जो अपनी बुध्धि को न्याय तर्क शास्त्रीय ज्ञान द्वारा जो निर्णय करे वह मूर्ख है । वह पशुतुल्य है । इसीलिये भले ही अपने पास थोडी बुद्धि हो भगवत पारायण हो जिस में भगवान का निश्चय हो उसी का निश्चय ही मोक्ष होगा; आत्मा का कल्याण होगा । भगवान ने जो कृपा करके बुद्धि दी है उसी का उपयोग परमात्मा के लिये नही करेगे तो वह भारस्म ही समझी जायेगी ।

डाकोर के दीनानाथ भट्ट थे, उन्हे सभी शास्त्रो का ज्ञान था । भट्टजी को श्रीजी महाराज ने पूछा "अपने इन शास्त्रो में अपनी आत्मा के कल्याण हेतु क्या माने है तब भट्टजी की आंखे खुली गयी । अरे ! बापजी आजतक मैने यह निश्चय नही किया था । मोक्ष के लिये भगवान को नही पहचान कर पुराणो को बाचता रहा ।

भले ही कोई पुराणो शास्त्रो को निपुणता से सुना शकता हो या न्यायस्थान देता हो लेकिन सत्पुस्षो का संग जिसने नही किया वह भले ही विद्वान हो लेकिन परमगति को प्राप्त नही कर सकता । इसीलीये भगवान श्री कृष्ण ने उध्धवजी को कहा की, अष्टांग योग, शास्त्रो, तथा सत-शास्त्रो का पठन, तप, त्याग, योगयज्ञ इत्यादि द्वारा मै किसीके वश में नही होता, मात्र सत्संग के वश में होता हूँ ।

श्रीजी महाराज इसी से कहां करते कि पूर्वजन्म के संस्कार से या इस जन्म के सत्संग से ही सत्पुरुषो का संग मिलता है । इसीलिये समर्थ संत या एकान्तिक भक्त हो उनके बिना

भगवान का महात्म्य या भगवत सम्भवित ज्ञान निश्चय होना संभव नही है। शास्त्र से या किसी विशिष्ट ज्ञान से निश्चय नहीं होता ।

जैसे हीरा से हीरा का छेदन होता है, अन्य से नही । इसी प्रकार भगवान का निश्चय भक्त से होता है। इसीलिये ऐसे संत या एकांतिक भक्तो से ज्ञान होता है । ईसीलीये ऐसे संत या एकांतिक भक्त को खोजना चाहिये । उन्हीं का सत्संग करना चाहिये । उन्ही के पास दास भाव से सेवा करनी चाहिये। उन्ही के वचन में श्रद्धा रखनी चाहिये । वे ही भगवान की पहचान करा सकते है ।

इसीलिये गुणातीतानंद स्वामी कहते कि जैसा समय वैसा व्यवहार करना चाहिये, उसमे मोह - आशक्ति नही आने देना चाहिये । केवल भगवान की आज्ञा में भक्त का कार्य होना चाहिये । तभी उनका वैराग्य स्थिर रहेगा । उनकी भक्ति मे भगवान नित्य रहेंगे । उन्ही का सत्संग व्यवस्थित रहेगा । तभी वह सुखी-समृद्ध हो सकता है । उसे परमात्मा का दर्शन हो सकता है । सच्चा सम्बंध जीव का परमात्मा के साथ हो जाता है । स्वामी कहते थे की अपने पास सोने की खान हो तो भी उसे जलाकर संत समागम का लाभ लेना चाहिए । तभी आपको कीर्तन -ध्यान मूर्ति का दर्शन सभी निश्चय वाला भगवान के साथ पानी में मीन बनकर रह सकेगा अन्यथा सुखी-धनी जो कुछ है सब सत्य नही है ।

जन्मभूमि में जन्म जयंती



रजत द्विशताब्दी जन्म जयंती महोत्सव

२५-२६-२७ अक्टूबर

परात्पर परब्रह्म परमात्मा अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति पूर्णपुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण अनंत जीवो के मोक्ष के लिए छपैया गाँव में धर्मपिता भक्तिमाता से संवत १८३७ चैत्र शुक्ल नवमी को १०-१० मिनट पर प्रगट हुए थे । उस पुण्य पवित्र प्रसंग को २२५ वर्ष पूर्ण होते ही करोडो भक्तों के हृदय में आनंद उत्साह को पूर्ण करने हेतु भगवान श्री स्वामिनारायण के सातवें वंशज प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री प.पू.ध.धु. निवृत आचार्य १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. लालजी १०८ श्री ब्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वस्मा गादीवालाश्री तथा प. पूज्य अ.सौ. लक्ष्मीस्वस्मा बडी गादीवालाश्री के आशीर्वाद से जन्म भूमि छपैया में "जन्मभूमि में जन्म जयंती" भगवान श्री स्वामिनारायण रजत द्विशताब्दी जन्म जयंती प्राकट्य महोत्सव धूम धाम से सम्पन्न किया जायेगा । जिस में लाखो हरिभक्त ब्रह्मांड के सर्वोपरि की सर्वश्रेष्ठ भूमि छपैया (यु.पी.) में तन-मन-धन की सेवा का अनुभव करेंगे । छपैया में भगवान श्री घनश्याम महाराज के स्वस्म में अखंड प्रत्यक्ष विराजमान रहते हैं । वहीं पर प्राकट्य उत्सव मनाकर अक्षरधाम के आनन्द रस से सभी लोग तरबोर हो जांय ।

निर्धारित समय : विक्रम संवत् २०६३ कार्तिक शुक्ल-३-४-५ ता. २५-२६-२७ अक्टूबर-२००६

आयोजन :

• रजत द्विशताब्दी महोत्सव जन्म जयंती • घनश्याम बाल चरित्र • कथापारायण • हरियाग • जन्मभूमि पूजन • तुलसी विवाह • समूह यज्ञोपवीत • समूह महापूजा • महा अभिषेक • छप्पन भोग • अन्नकूट • गुरु मंत्र महोत्सव • तप्त मुद्रादान • महोत्सव • अखंड धूनि • धर्मकुल पूजन • धरमकुल-भक्तिकुल भोजन • शोभायात्रा • कीर्तन आराधना • लीला चरित्रों का भव्य प्रदर्शन • प.पू. महाराजश्री के साथ छपैया की परिक्रमा ।

आयोजक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

सम्पर्क तथा व्यवस्थापक

महंत ब्र. वासुदेवानंदजी गुरुगवैया ब्रह्मचारी स्वामी राकृष्णदासजी

श्री स्वामिनारायण मंदिर छपैया जि. गौंडा (उ.प्र.) फोन : (०५२६५) २५४२१३, २५४२३३.

कल्याण के दाता धर्म वंशी

- पार्षद घनश्याम भगत गुरु जगतप्रकाशदासजी (धोळका)

समाज के अन्दर बहुत धर्म गुरु एवं आचार्य की स्थापना हुई होगी पर अपने संप्रदाय जैसी गुरु परम्परा एवं आचार्य महाराजश्री के जैसा स्थापना नही हुआ है । और हो भी कैसे सकता है ? क्योकि सर्वोपरि भगवान तो केवल स्वामिनारायण ही है। उनकी मर्जी के बिना तो पत्ता भी नही हिल सकता और अगर ऐसे भगवान खुद किसी सम्प्रदाय एवं आचार्य महाराजश्री की स्थापना करते है तो वह सर्वोपरि ही है । तथा भगवान स्वामिनारायण ने धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री को इस सम्प्रदाय का धर्म गुरुबनाये तथा सम्प्रदाय की तमाम जिम्मेदारी सौंपी और श्रीजी महाराज ने आदेश दिया आप पुरुषवर्ग को सच्चा ज्ञान देकर मेरे सर्वोपरि अक्षरधाम में पहुंचने का मार्ग बतायेगे और आप की धर्म पत्नी अखण्ड सौ भाग्यवती लक्ष्मीस्वरुपा पूज्य गादीवाला जो बहन वर्ग हो नियम, निश्चय, पक्ष, रखवाकर मेरे अक्षरधाम की प्राप्ति करवायेगीं और श्रीहरि ने कहा "कि यह स्वामिनारायण सम्प्रदाय सर्वोपरि सम्प्रदाय है।" यह सम्प्रदाय प्रगट स्वरुप उपासक है । इसीलिए भगवान स्वामिनारायण ने हमको देव, मंदिर, शास्त्र, आचार्य, संत, हरिभक्त प्रदान किये है। आज प्रत्येक जीवात्मा को भगवान सर्वोपरि के अक्षरधाम में जाने का सुलभ अमूल्य अवसर प्रदान हुआ है। ऐसे अक्षरधाम को कहना तो आसान है पर उसका वर्णन करना असक्य है ऐसे अक्षरधाम का वर्णन भगवान ही कर सकते है। जो हमेशा शीतल है, जो शांत है, जो दिव्य है, जो तेजोमय है, जो अखण्ड है, अनादि है, ऐसे अक्षरधाम का सफर तय करने के लिए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मार्ग दर्शन से पहुँचा जा सकता है। आज समाज के अन्दर स्वार्थी, दम्भी पाखण्डी गुरु की गद्दी लेकर समाज को गलत दिशा दे रहे है । आज समाज के अन्दर ऐसे लोग है . जो सूक्ष्म स्वार्थ के खातिर माता को माता-पिता को पिता कहने मे शर्म आती है। जो अपने पिता के आदर्श को ठुकराता हो जो व्यक्ति कहे शिक्षापत्री वचनामृत को बदलने की आवश्यकता है जो ऐसा कहते हो कि धर्म का पालन करने कराने वाला ही धर्मकुल है । ऐसे लोगो से बचकर रहना चाहिए नही तो ये खुद मरेंगे और हमको भी साथ ले जायेगे ।

सर्व जीव हितावह शिक्षापत्री अंतगति श्लोक न. तीन मे लिखा है "श्री धर्मदेवजी से जिनका जन्म हुआ वह हमारे भाई रामप्रतापजी एवं इच्छा रामजी उनके सुपुत्र अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरप्रसादजी जिनको हमारा गोद पुत्र बना करके सब सत्संगी के गुरु पद के लिए आचार्य की स्थापना की है । यह पद मेरे कुल में रहना अनिवार्य है । इस कुल के जितना कोई उत्तम कुल नही है । और जिस स्वरुप को आचार्य महाराजश्री पूजा करने के लिए देह या प्राण प्रतिष्ठा करे वही मूर्ति पूजने योग्य होती है । अन्य मूर्तियो की पूजा करने से पाप होता है । तथा धर्मवंशी वर्तमान आचार्य से मन्त्र दीक्षा लेने के पश्चात आत्यंन्तिक कल्याण का सम्पूर्ण अवसर प्राप्त हो जाता है । इसके शिवाय अति दुलर्भ है। गुरु मंत्र लेने की बात श्रीहरि ने शिक्षापत्री १२८ श्लोक में कहा है "और हमारे आश्रित जो सर्व सत्संगी उनके धर्म रक्षा करने हेतु जो सर्व गुण सम्पन ऐसे आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी एवं रघुवीरप्रसादजी ने उन मुमुक्षु को दिक्षा देना" तथा श्रीहरिः वचनामृत मे कहते है। धर्मकुल आश्रित ऐसा भगवान का भक्त भगवान के इच्छा से भगवान के धाम में जाता है। तब कोई तो गुण पर बैठ कर जाता है । कोई रथ पर बैठ कर जाता है इस प्रकार भगवान का भक्त भगवान के धाम में जाता है । उनको योग समाधि वाले प्रत्यक्ष देखते है। इस लिए हमे देखना होगा कि हम सही जगह पर है या नहीं तो फिर हमारे हाथ से एक अमूल्य लाभ चला जायेगा ।

सत्संग सुरभि :

सुखी तो थे अब और सुखिया हो गये

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

नेनपुर नामक एव गाँव है । जहाँ देवजी पटेल अपनी पत्नी एवं पुत्र के साथ रहते थे । तीनों महाराज की भक्ति करते । महाराज की भक्ति में कोई बनावट नहीं थी निर्च्छल भाव की भक्ति थी ।

पुत्र बडा हुआ उसके लिए कन्या की मांग आने लगी । परन्तु देवजी भक्त का मन नहीं मान रहा था । पुत्र भी कहने लगा "मेरा मन संसार में नहीं है। इतने में पुत्र की मृत्यु हो गयी ।"

जवान एक ही पुत्र वही मृत्यु को प्राप्त हो गया । फिर भी देवजी तथा उनकी पत्नी के मन में थोडी भी आसक्ति नहीं आयी । पुत्र के मृत्यु हो जाने पर देवजी कहते "भगवान उसे बुला लिये, फिर उसके लिये शोक क्या करना । पुत्र की माता कहती "हमारा पुत्र भगवान के धाम में गया"

तो अब क्यां करें ? जवान पुत्र मर गया लोग सुनकर एकत्रित होगें और साथ में रोने को कहेंगे ।

देवजीने कहा "तो मैं जा रहा हूँ खेत में वही रहूंगा "तू जा गढड़ा महाराज के पास दर्शन करने" साथ में महाराज एवं संतो के लिए घी लेती जाना बाद में देवजी खेत में गये वहीं रहे, इधर उनकी पत्नी माथे पर घड़ा भरकर घी लेकर गढडा के लिए चल दी । महाराज उस समय भोजन कर रहे थे । घड़ा उनके सामने रखकर कही "महाराज आपका भक्त जयस्वामिनारायण कहा है ।

महाराज उस महिला को पहचान गये । जिसका एक ही बेटा वह भी धाम में चला गया । फिर भी मुखमंडल पर थोड़ी सिकन नहीं थी । मात्र वह महाराज के मुख मंडल को ध्यान से देखे जा रही थी । महाराज ध्यान भंग करते हुए पूछे "पटेल कैसे हैं ? सुखी तो है न ? उत्तर देते हुए वह भक्ता बोली "पहले तो सुखी थे अब और अधिक सुखी हो गये ।" यह कैसे ? जरा कहो तो सही, महाराज ने कहा ।

महाराज की शैली बड़ी अलग की थी । व्यक्ति अपनी वातस्वयं करे तो पता चले लेकिन महाराज स्वयं इसे जान रहे थे । भक्ता ने विस्तारपूर्वक अपनी सम्पूर्ण बात वता दी कि आप के भक्त को एक ही पुत्र था जिसकी रातदिन चिन्ता रहती, लेकिन आप उसे अपने धाम में ले गये, इसलिए पटेल सुखिया हो गये, पहले भजन करने में अडचन होती थी अब कोई अडचन नहीं है । इसीलिए कहती हूँ कि सुखी तो थे अब और सुखी हो गये ।

महिला की बात सुनकर महाराज और प्रसन्न हो गये । पाचुबा की पांच वर्ष की पुत्री हीस्बा थोड़े समय पहले ही मृत्यु को प्राप्त हुई । सभी स्त्रियां शोक कर रही थी, उन सभी के सामने महाराज देखते हुए कहे "इस भक्त की समझ तो देखो, इनका एक जवान बेटा मर गया तो भी प्रसन्न हैं, यहाँ पांच वर्ष की हीस्बा धाम में गयी तो सम्पूर्ण दरबार शोक प्रगट कर रहा है । शोक में मेरा भोजन भी बन्द हो गया है ।

ऐसा कहकर महाराज घडे में से घी निकाल कर रोटी में लगाये स्वयं खाने लगे और प्रसाद के स्प में मुक्तानंद स्वामी को दिये । वहाँ उपस्थित अन्य को भी दिये ।

घी का प्रसाद आज मेरे स्वामी लिये यह देखकर उस भक्त के आंखो से अश्रुधारा बह पडी । पुत्र की मृत्यु का शोक तो था ही नहीं, लेकिन महाराज हमें दर्शन देकर प्रसाद ग्रहण करके हमें सत्य स्प में सुखी बना दिये हैं इस बात का आनन्द अंन्तर में फैल रहा था ।

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव की दैनिक सांध्य थाल

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शाम के पक्के थाल कुछ समय से शुरु किए गये है । तो जो भाविक श्रद्धालु हरिभक्तोको ठाकुरजी को शाम की थाल करवाने की इच्छा हो वह कोठार में ५००- स्पये भर सकते हैं । शाम के थाल की प्रसादी नही दी जाती है ।

सत्संग बालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

चींटी को कन हाथी को मन

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

भगवान का एकनाम विश्वम्भर है । विश्व भगवान का सर्जन है । इसमें चीटीं से लेकर हाथी तक जीवों का पोषण भगवान करते है । भगवान ही पालनहार हैं । यदि भगवान की इच्छा न होतो मनुष्य के पास चाहे जितने प्रकार के व्यंजन भोज्यपदार्थ हों वह खा नहीं सकता हैं । यदि भगवान की इच्छा हो तो कुछ भी न होने पर सबकुछ खा सकता है । बात ऐसी है कि एक राजा को अहंकार हो गया । उसे ऐसा हो गया कि मैं राजा हूँ । इस देश का मालिक हूँ । मुझसे यह प्रजा सुखी है । सभी को मैं अन्नजल देता हूँ । मैं पालक हूँ, मैं पोषक हूँ, मैं विश्वम्भर हूँ ।

यथार्थत : विश्वम्भर ही परममात्मा हैं । जीवमात्र का पोषण करने वाला है । लेकिन राजा को कहेगा कौन ? राजा के अगल बगल ऐसे लोग थे अहो स्वम्, अहोध्वनि: करने वाले थे । जिससे उसका अहंकार और बढ गया ।

उसके शहर में एक महात्मा आये । प्रवचन करने लगे । संयोगवश राजा एक दिन प्रवचन सुनने गया । महात्माजी बोल रहे थे कि हे भक्तो ! प्रभु का भजन करना । अपने जन्मदाता, पोषण कर्ता एकमात्र परमात्मा ही हैं । यदि ऐसे परमात्मा को भूल जायें तो कृतघ्नी कहे जायेंगे । महात्माजी आगे बढकर कहने लगे कि इस जगत में ऐसे मूर्ख हैं, अज्ञानी हैं जो स्वंय को कुटुम्ब का पोषक मानते हैं । एक दूसरे को पूर्ण करने वाला मैं ही हूँ । अरे अज्ञानी ! तुम्हारे जीवन की लगाम तेरे हाथ में नही है तो दूसरे का क्या कर सकता है ?

यह सुनकर अभिमानी राजा क्रोधित होकर बोला अरे साधु ? आप क्या जानते हैं ? मैं ही सभी का पालक हूँ, पोषक हूँ, विश्वरमभर हूँ । राजा के साथ हाँजी-हाँजी करने वालों ने ऐसा ही कहा - राजा ही एकमात्र सर्वस्व हैं ।

लेकिन महात्माजी थोडा क्रोधित होकर कहे अरे मूर्ख ! तुम्हारे ही राज्य में कौआ, कुत्ता, पक्षी, गाय, बकरी आदि प्राणियों का पोषण कौन करता हैं ? हाँ-हाँ मैं करता हूँ । महात्माजीने कहा तो बता तेरे राज्य में कितने कौए हैं ? कितने पक्षी हैं ? कितने पशु हैं ? राजा ने कहा इसकी मुझे खबर नहीं है ।

अरे ! जब तुम्हें संख्या की खबर नहीं है, तो इन सभी को कितना और कैसे रासन की व्यवस्था करते हो ।

राजा घबड़ा गया । महात्माजी तो कहते ही गये । तुम्हारे राज्य में चींटी कितनी है ? उनका पोषण तूं कैसे करता है ? ऐसे प्रश्न सुनकर राजा क्रोधित होकर कहा तो आप ही बताइये कि आपके भगवान चींटियो का पोषण कैसे करते हैं ? महात्माजीने कहा परीक्षा करलो ? बात थोडी आगे बढ गयी । एक डीब्बी मंगाई गयी उसमें चींटी को राजा स्वंय बन्द कर दिया और कहा कि अब मैं देखता हूँ कि आप के भगवान इस चींटी का पोषण कैसे करते है ? मैं भरी सभा में कल इस डिब्बी को खोलूंगा । जब यह भूखे मरी होगी तो आपको देश निकाला करवा दूँगा ।

महात्माजीको विश्वास था लेकिन प्रभु क्या करेंगे ? इसका ख्याल नहीं था । दूसरे दिन सभा में राजा ने डिब्बी खोला तो डिब्बी के भीतर चींटी चावल का कंण लिये हुए थी ।

चींटी को जब राजा डिब्बी में बन्द कर रहा था उस समय उसके मस्तक से चावल का एक कण उस डिब्बी में गिर गया था । प्रभु इस प्रकार से चींटी को भोजन पहुंचाये ।

राजा का अभिमान खत्म हो गया । वह भक्त बन गया । और मान गया कि मात्र विश्वम्भर तो भगवान ही हैं । ''चींटी को कन हाथी को मन चार पगा को चाट जोने''..... सभी को जीवन देने वाले एकमात्र नारायण

हैं। मानव का अभिमान व्यर्थ हैं।

मित्रो ! कहानी वांची न ? इसी लिए देवानन्द स्वामी कहते हैं कि "देवानन्द कहे देव भरोसे मगन थई ने म्हालों जोने" स्वामिनारायण भगवान के ऊपर जिसको विश्वास है उस के लिये स्वामिनारायण भगवान ने अपने गुरु से वरदान मांगे थे कि हमारे आश्रित अन्नवस्त्रों से दु:खी न रहें। किसी को प्रारब्ध से दु:ख आने वाला हो तो वह भी हमें मिले और हमारे भक्त सुखिया हों। इसलिये भगवान स्वामिनारायण अपने आश्रितों के अन्नवस्त्र की चिंता स्वंय करते हैं। इसलिये मित्रो ! पुरुषार्थ अपना + भगवान की कृपा अन्नवस्त्र की जयजय कार।

•

एक घडी आधी घडी

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

छुट्टी के दिनों में घूमने का आनन्द, खेलने का आनन्द, खाने का आनन्द और पढने की चिंता नहीं। चिन्टू और पिन्टू दोनो मित्र साथ में खेलने जाते, घूमने जाते, सुबह होते ही इकट्ठा हो जाते प्लान बनाते कि आज कहाँ जाना है। प्लान के अनुसार सभी एकत्रित हुए। चिन्टुने कहा आज कहीं नहीं जाना है। आज सत्संग सभा में चलते हैं। चिन्टु ने कहा हमे सत्संग सभा में नहीं आना है। क्यों ? सत्संग सभा में क्या होता है। एक साधु कीर्तन बोलता है बाद में भगवान की कथावार्ता करता है, इसमें क्या ? अरे मूर्ख ! जो कुछ है सबकुछ इसीमें हैं। जिन्दगी में चाहे जितने सत्कर्म करो - दान, व्रत, तप, त्याग, तीर्थ, योग, यज्ञ ये सभी सत्संग के विना अधूरे है। जिन्दगी में अच्छे सद्गुण की चाहना हो, प्रत्येक क्षेत्रमें सफलता प्राप्त करनी हो, शांति-संतोष प्राप्त करना हो तो सत्संग से ही सम्भव है। पिन्टू इसमें हमें कोई खबर नहीं पड़ती। तूं चिंता क्यों करता है। जो कथा वांचते है उन संत के साथ हमारा अच्छा सम्बन्ध है। उनके सामने मैं तुम्हारी बात करुँगा। बाद में तुमको समझायेंगे।

तो चलो हम तुम्हारे साथ चलते हैं। दोनो मित्र एक साथ सत्संग सभा में गये। सुन्दर भगवान के भक्तों की सभा लगी हुई थी। वे दोनो जहाँ जगह देखे वहाँ बैठ गये। बाद में सभा का आरम्भ कीर्तन से हुआ।

तारी मूरति रे छे जो नेणानो
शणगार.....

यह कीर्तन पूर्ण होते ही कथा प्रारम्भ हुई। सत्संग की महिमा समझाते हुए कथाकारने कहा कि अष्टांग योग, सांख्य, तप, त्याग, तीर्थ, व्रत तथा दानादिक से भगवान वश में नहीं होते बल्कि सत्संग से वश में हो जाते है। इसलिये जीवन का कल्याण सत्संग से सम्भव है। सत्संग से जीव का कल्याण सम्भव, यम पाश से बच सकता है। सत्संग विना जीवन में अच्छे गुण आही नहीं सकते। इसलिये सत्संग बहुत आवश्यक है।

"क्षणमपि सज्जन संगतिरेका भवति भवार्णव तरणे नौका" एक क्षण भी सज्जन पुरुष की संगति संसार सागर से पार होने के लिए पूर्ण है। सत्संग की महिमा समझाते हुए संत लोग दृष्टांत देते हैं।

दो जीव एक साथ मृत्यु को प्राप्त हुए। यमदूत दोनो जीव को लेकर यमपुरी गये। यमराज के पास हाजिर किया गया। यमराज अपने आसन पर बैठे हुए थे, उनके बगल में चित्र गुप्त बैठे थे, जो जीव मात्र का हिसाब किताब लिखते है। यमराज की आज्ञा हुई और चित्रगुप्त दोनों जीवों का अच्छा-बुरा सभी बता दिये। यमराज दोनो जीवों की आयुपूर्ण एक ही दिन देखी तथा शरीर एक ही दिन छोडने को देखा। इसके साथ यहभी देखा कि एक जीव का पुण्य अधिक था लेकिन पाप भी किया था, इसलिये यमराजने उस जीव से पूछा कि पहले पाप भोगना है या पुण्य, तो जीव ने सोचा कि पाप थोडे समय के लिये भोगना है, पुण्य अधिक समय केलिये, तो पहले पाप भोग ले, तुरंत ही पाप भोगने की बात कही और यमराज उसे धरती पर काला भुजं बनाकर भेंज दिया। वह जमीन पर कुछ समय के लिये पाप भोगने हेतु आया, अपने स्वभाव के अनुसार ठन्ढक स्थान खोजने लगा। इतने में एक स्त्री कुएं से पानी लेने आयी

और कूएं की ढन्ढक लेने हेतु उसी तरफ सर्पभी चला, बीच में स्त्री का पैर उस सर्प की पूंछ पर पडा सर्पने उसे डंस लिया, वह मर गयी उस स्त्री के उदर में बालक था, वह भी मर गया । इस प्रकार दो जीव के हत्या का पाप उस जीव को लगा । थोडा पाप भोगने में बडा पाप हो गया और उसे नरक कुंड में जाना पडा । चाहे जितना भी सत्कर्म किया हो सत्संग के विना सद्विचार या सद्बुद्धि के अभाव में जीव को नरक में जाना पडा ।

यमराज ने दूसरे जीव से कहा "तुम्हारे जीवन में कभी सत्कर्म हुआ ही नहीं है । तुम्हे तो रौरव नरक में ही जाना पडेगा । तुम्हारा थोडा पुण्य है तो पहले तुम क्या भोगना चाहते हो ? यदि तुम्हारी इच्छा हो तो थोडे समय के लिये राजा बना दूँ । तब उस जीव को सद्विचार आया कि मेरा थोड़ा भी पुण्य हो तो मुझे किसी महात्मा के चरण में रख दीजिए । यमराज घबडा गये । फिर भी घबड़ा कर तथास्तु कह दिये । जंगल में एक महात्मा के चरण में पड़कर कहता है कि महात्माजी ! हमें बचाइये । मैं सम्पूर्ण जीवन पाप ही किया हूँ । अब मुझे उसका पश्चाताप हो रहा है । मैं बड़ा पापी हूँ । महात्माजी समाधि में थे । वह जीव महात्मा के सामने हाथ जोड़कर गिड़गिड़ा रहा था । जब समाधि में से महात्माजी जगे वहाँ ही दृष्टि पडते वह जीव पाप से मुक्त हो गया महात्माजी उस जीव के मस्तक पर हाथ रखकर कहे कि तुम क्यो डर रहे हो ? तूं अपने पश्चाताप से पवित्र हो गया है । अब भगवान की भजन कर । धैर्य रख । अभी भगवान हमे दर्शन देने आयेंगे । तब तूं भगवान का चरण पकड़ लेना तुम्हारी सद्गति हो जायेगी । उस जीव ने भगवान की भजन प्रारम्भ कर दिया । उस जीव का समय पूरा होने आया, उधर यमदूत उसके पाप का फल देने महात्माजी के आश्रम में आये । लेकिन आश्रम में प्रवेश नहीं कर सकते । वह जीव यमदूतों को देखकर डरने लगता है । हे महात्माजी भगवान कब आयेंगे ? ये यमदूत आ गये हैं । हमें लेजायेंगे । तब महात्माजी हंसते हुए कहते हैं तुम क्यों इतना डर रहे हो । ये यमदूत आश्रम में प्रवेश नहीं कर सकते । तुम निश्चिंत होजाओ । इतने में अधिक प्रकाश दिखाई देता है । अतिशय तेज पुंज के भीतर भगवान का दर्शन होता है । उस जीव की वृत्ति स्थिर होती है । भगवान के स्वरूप का दर्शन करने में मन स्थिर हो जाता है । वह जीव भगवान के धाममें पहुंच जाता है ।

यह दृष्टांत देते हुए संत कहते है कि सत्संग से सद् विचार, सद्बुद्धि, सद्गुणों की प्राप्ति होती है । पापी जीव भी पुण्य के मार्ग पर आगे बढता है । कथा पूर्ण हुई भगवान की जय बोली गयी सभी प्रसाद लेकर स्वस्थान प्रस्थान किये ।

बाहर आकर पिन्टु ने चिन्टु का आभार माना । मित्र ! आज सही में तुम मुझे अच्छी जगह पर लाये । मेरे भीतर खूब शांति का अनुभव हो रहा है । सत्संग की महिमा अब समझ में आ गयी । मैं तुम्हारा उपकार जिन्दगी भर नहीं भूलूंगा ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिए प्रसादी की अलौकिक वस्तुओं की भेंट

संप्रदाय में वहेलाल का नाम लेती ही जेशंगभाई का सरलता से स्मरण हो आता है । ऐसे दिव्य प्रसादी के गाँव में सर्वोपरि श्रीहरि के स्पर्श से उपयोग में आयी हुई अनेक वस्तुये संग्रहीत हैं । गाँव के समस्त हरिभक्तों को प.पू. बडे महाराजश्री के दिव्य संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम में अपने गाँव की वस्तुओं को अर्पण करने के लिए इच्छा हुई । जिससे प्रसादी का दरवाजा, सीढी, श्री स्वामिनारायण म्युझियम में दर्शनार्थ रखा जाय तो देश विदेश के लाखों हरिभक्तों को एक स्थल पर दर्शन का लाभ मिल सके, इसके साथ कल्पांततक उन प्रसादी की वस्तुओं का रख रखाव हो सके । इसी को ध्यान में रखखर गाँव हरिभक्तो श्री स्वामिनारायण म्युझियम के लिए अर्पण किये है ।

गाँव के सभी हरिभक्तों की तरफ से हसमुखभाई शांतिलाल केतनभाई आर. पटेल, शिवाभाई पुंजाभाई पटेल, मुकेश रावजीभाई पटेल, धीरूभाई कसीभाई पटेल, धीरजलाल बी. पटेल इथ्या सहभागी हैं ।

।। भक्तिसुधा ।।

माताजी (जमकुबाई)

- लोया पटेल (हरभोलापार्क)

उदयपुर के राजा की पत्नी झमकुबाई महाराज के ऐश्वर्य, चमत्कार तथा प्रगट होने की बात सुनी थीं । उनके विचार में आया कि इस निवास में रहकर भोग विलास में लिप्त रहने की अपेक्षा भगवान का आश्रय प्राप्त करके आत्मकल्याण क्यों न प्राप्त करें ?

मीरा के वंश में जैसे प्रभु थे, जहर के प्याले को अमृत बना दिये थे । इसी प्रकार भगवान मेरी इच्छा पूर्ण करेंगे । बहुत उपाय करने पर भी किसी में सफलता नहीं मिली कारण यह कि राजा की मुख्य रानी होने से दास दासियां अखंड तैनात रहती थी ।

बाद में तो जीवन इतना परिवर्तित हो गया कि रात-दिन भगवान की पूजा ही पूजा करती रहती । राजा तो यह देखकर और भी असह्य हो गया । वह शाम, दाम, भेद, दंड का प्रयत्न किया उसमें भी निष्फल रहा । झमकुबाई का जीवन उत्तरोत्तर वैराग्य की तरफ ही बढता गया ।

एकदिन भाग जाने के विचार से रात्रि में पीछे के भाग से साडी बांधकर उतर गयी । महाप्रभु का नाम लेते हुए, अन्धेरी रात में नंगे पांव विना मार्ग ज्ञान के, नदीनाला, वन, पर्वत सभी पार करके, सूर्योदय से पूर्व दश गाँव निकल गयीं ।

इधर दासियों ने राजा को खबर दिया पटरानी दिखाई नहीं दे रही हैं। पीछे के तरफ साडी लटक रही है । इतना सुनते ही राजाने सेवको को चारो तरफ घोडे से पीछा करने का आदेश दे दिया ।

झमकुबाई को मनमें डर था कि मुझे पकडने का प्रयास किया जायेगा । इतने में घोडों के टाप की आवाज सुनाई दी । वे तत्काल मरें ऊंट के हाडपिन्जर में छिप गयीं उधर घुडसवार आगे निकल गये । जब तक टोप सुनाई दी तबतक दुर्गन्ध वाले हाड पिंजर में छिपी रही । इतना ही नहीं डरके कारण उसमें भूखे प्यासे तीन दिननिकाल दीं । घुडसवार खोजकर वापस आ गये तब बाहर निकली । नदी में स्नान की, फिर आगे बढ़ीं । आगे चलते वणझारा की स्त्रियां मिली, उनसे कहीं कि मुझे काठियावाड पहुंचा दो, ऐसा कहकर गले में से एक सोने का हार निकाल कर देदीं । इस में पुरुषवर्ग भी था, वे साथ लेकर चल दिये । उन्हीं से आंटा लेकर बाटी बनाकर खाते पीते आगे बढ ही रही थी कि एक बणझारा की दृष्टि नव युवती देखकर बुद्धि बिगड गयी और उसने कहा मुझे छोड़कर अब तुम्हे कहीं जाना नहीं है ।

बुद्धिशाली झमकुबाई सतर्क हो गयी । बणझारा जिस गाँव में रुके थे वह वडनगर था । झमकुबाईने कहा मैं नहाँ के आ रही हूँ । वहाँ कुछ स्त्रियां स्वामिनारायण का भजन कर रही थी । उन स्त्रियों से झमकुबाईने आपबीती सुनाया तो वे छिपाकर अपने घर ले आयीं ।

उधर बणझारा ने बहुत खोज किया लेकिन झमकुबाई नहीं मिली । कुछ दिन के बाद वडनगर के हरिभक्त उन्हें साथ लेकर गढपुर पहुंचा दिये । वहाँ पहुचने पर श्रीहरि का दर्शन होते ही मन में शांति तथा चित्त स्थिर हो गया । महाराज ने उनका स्वागत किया । वे सभी जानते थे तो भी सभी के लिये रास्ते का सर्व वृत्तान्त पूछे । सभी वृत्तान्त झमकुबाईने सुनाया बाद में महाराज ने उनसे कहा कि आपको कोई पहचान न सके इस लिए मैं आपका नाम माताजी रखता हूँ, सभी लोग माताजी कहकर पुकारेंगे ।

कुछ दिन बीतने के बाद महाराज ने कहा आपको कच्छ भेंज दूं तो कैसा रहेगा ? झमकुबाई ने महाराज की पर्सन्नता मेंअपनी प्रसन्नता मानकर हां कर दिया । उन्हें यह नहीं हुआ कि मैं इतना दूर चलकर आयी और महाराजसे दूर रहना होगा । बाद में महाराजने माताजी को भुज में लाधीबा के पास भेंज दिया, जीवनपर्यंत वहीं रही । श्रीहरिने लोया के तीसरे वचनामृत में माताजी के त्याग की खूब प्रसंशा किया है ।

●

मेरे गरीब नेवाज

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला
(अहमदाबाद)

बांधगज गाँव में दो सत्संगी स्त्रियां रहती थी । एक गरीब थी, जिसका नाम था सोनल भावसार । भले व्यवहार में गरीब थी परंतु श्रीजी महाराज के प्रति भाव ऊंचा था, अमीर भाव था ।

दूसरी स्त्री धनी थी । जिसका नाम था गंगाबाई वह नागर ब्राह्मणी थी ।

एकबार सोनलबाई महाजा को तथा संतो को भोजन के लिये आमंत्रण दी । गंगाबाई को इसकी खबर मिली वह तुरंत सोनलबाई को जाकर कह आई तुम्हारे पास अच्छे क्वालीटी के दाल-चावल नहीं है, तूं केवल संतो को भोजन बना, मैं महाराज के लिए उत्तम क्वालीटी के अन्न का भोजन बनाती हूँ ।

गरीब सोनलबाई स्वभाव से भी गरीब । उसने दु:खित मन से हाँ कह दिया । फिर भी उसके मन में होने लगा कि मेरा अन्न अच्छा नहीं है । मेरा अन्न महाराज के काम में नहीं आयेगा ?

दोपहर का समय हुआ । महाराज सोनलबाई के घर भोजन के लिए पधारे । महाराज सोनबाई की तरफ देखे तो उनका मुंख फीका लग रहा था । आखों से अश्रु बह रहे थे इसका कारण महाराज ने पूछा तो सभी सोनलबाई ने बता दिया ।

महाराज ने कहा "सोनलबाई दु:खी मत हो" तुम्हारे घर में जो रसोई बनी है वही ले आओ । मुझे बहुत भूख लगी है तुम्हारा ही अन्न खाना है ।

सोनलबाई प्रसन्न हो गयी - अच्छा आसन बिछाई । महाराज को बैठाया और भोजन पीरस कर जिमाने लगी पंखा झलने लगी । आज ब्रह्मांड के अधिपति एक गरीब बाई के घर भोजन कर रहे थे । इतने में गंगा बाई अपने घर से भोजन महाराज के लिए लेकर आ पहुंची, इधर तो महाराज जिम रहे थे और कहे कि तुम दोनो इस थाल के भोजन को जिम लेना मुझे तो सोनलबाई का भोजन अच्छा लग रहा है ।

गंगाबाई को अन्तर्ज्ञान हुआ । महाराज की आवाज से उनकी भूल समझ में आ गयी । सोनबाई का दिल निर्मल था । मेरे मन के भाव को महाराज समझ गये थे । इसीलिए मेरी थाल का भोजन नहीं किये ।

भोजन करके महाराज ऊपर आसन पर बैठे गंगाबाई चरण स्पर्श की और कही कि बाहरे महाराज आज आपने इस सोनलबाई के घर भोजन करके गरीब नेवाज नाम को सार्थक किया है । परंतु मेरी रसोई को भी अपने हाथ से स्पर्श करके पवित्र कीजिए इतनी हमारी विन्ती है ।

महाराजने गंगाबाई की रसोई का स्पर्श करके प्रसादी का बना दिया । महाराज तथा संत वहाँ से विदा हुए । दोनो स्त्रियां महाराज के आंख ओझल तक दृष्टि से देख रही थी । दोनो सखी भाव से महाराज के प्रति आत्मचिन्तन करती जा रही थी ।

•

जीजी बाई

- ध्वनि पटेल (हरभोलापार्क)

झालावाड में मेथाण गाँव में रहने वाली जीजीबाई रामानन्द स्वामी की शिष्या थी । स्वंय झालाकुल में उत्पन्न हुई थी । उनके दो भाई थे एक का नाम पुंजाजी दूसरे का नाम काका भाई। सं. १८५९ में महाराज प्रथम वार पधारे थे । उस समय पुंजाजी के घर ही रुके थे । कथा चल रही थी । जीजीबाई भी अन्दर बैठकर कथा सुन रही थी ।

उन्हें विचार आया कि रामानन्द स्वामी तो शरीर से हृष्ट पुष्ट थे ये तो दुबले-पतले है, स्वामी के शिष्य नहीं हो सकते । इतने में उन्हें ऐसा लगा कि रामानन्द स्वामी स्वंय महाराज की स्तुति कर रहे हैं । बाद में महाराज ने जीजीबाई को बाहर बुलाकर पूछा कि क्यां संकल्प हो रहा था ? तब सभी वात उन्होंने बताया जिसे पूंजाभाई एवं काकाभाई सुन रहे थे, सुनने के बाद दोनो को महाराज में दृढ विश्वास हो गया ।

१९८२ की साल में महाराज कच्छ से चलकर आ रहे थे । जीजीबाई को यह स्वप्न में दिखाई दिया । प्रात: उठते ही काका भाई को घोड़ा लेकर सामने जाने को कहीं । श्रीजी महाराज घोड़ेपर बैठकर मेथाण आये ।

पुंजाजी उत्सव की तैयारी किये हुए थे । महाराज जीजीबाई के घर पधारे । वहाँ नाना भांति के पक्वान्न जीजीबाई तैयार करके रखी थी । बडे प्रेम से महाराज को पीरस कर खिलाई और पूजा की ।

जीजीबाई की प्रेमलक्षणा भक्ति के वश में होकर महाराज कितनी बार मेथाण पधारे थे । इस प्रकार अनेकों लीला महाराज ने किया है ।

•

सत्यज्ञान

- सां.यो. कुन्दनबा गुरु कंचनबा (मेडा)

ज्ञान अर्थात् क्या ? सच्चा ज्ञान किसे कहते हैं ? हे भक्त जन ? जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म, परब्रह्म इन स्वरूपों को यथार्थ रूप से जानना । इसे ही ज्ञान कहते हैं । दुनियां में विविध प्रकार का ज्ञान होता है । लेकिन मोक्ष के लिए जो ज्ञान हो वही यथार्थ ज्ञान है । हे भक्तो ? भगवत् विषयक ज्ञान ही ज्ञान कहा जा सकता है । भगवान ने वचनामृत में भी कहाहै कि "मुझे ज्ञानी बहुत प्रिय है, ज्ञानी हमारे प्राण के समान है । इसलिए भगवान का प्रिय बनना हो तो ऐसा ज्ञान प्राप्त करना ही होगा ।

अपने इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण ने लोज गाँव में मुक्तानंद स्वामी को जब प्रथमवार गुरुभाई बनाये तो उनकी भी परीक्षा की थी । मुक्तानंद स्वामी से पांच प्रश्न पूछा था - १. जीव, २. ईश्वर, ३. माया, ४. ब्रह्म, ५. परब्रह्म इन पांचो का क्या लक्षण है ? प्रथम अपने जीव के स्वरूप को पहचानिये । जीव हृदय में अणु के समान सूक्ष्म चैतन्यरूप समझना चाहिये । जीवात्मा नख-शिख तक व्याप्त होकर इस शरीर में है । जैसे मंदिर में एक स्थल पर दीपक रखा हो उसे अग्नि की ज्योति दीपक तक रहती है । सामान्य रूप से सम्पूर्ण घर में व्याप्त होकर रहती है । इसी प्रकार जीवात्मा पंचभूत के रूप में व्याप्त है तथा सामान्य रूप से देह में व्याप्त है । जीवात्मा आंख, कान, नाक, जीभ, चर्म पांच ज्ञानेन्द्रिय तथा वाणी, हाथ, पग, शिरन, गुदा इन पांच कर्मेन्द्रिय तथा मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार इनचार अंतःकरणों द्वारा अनेक क्रिया करता है । पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, इन पांच महाभूतो से वना यह स्थूल देह है । इस का कर्म भोग जबतक है तब तक जीवात्मा का शरीर के साथ सम्बन्ध है । कारण देह का कोई तत्व होता ही नहीं है । जीवात्मा जगत के पंच विषयो का भोग करता है । इसे ही वासना कहते हैं । स्थूल-सूक्ष्म तथा कारण देह में जीवात्मा व्याप्त होकर रहता है । जीवात्मा का नाश कभी होता नहीं है । मनुष्य जैसे पूराने वस्त्र का त्याग करके नये वस्त्रधारण करता है उसी प्रकार जीवात्मा पुरानी शरीर का परित्याग करके नयी शरीर धारण करता है । आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकता, अग्नि जला नहीं सकती, पानी भिगा नहीं सकता पवन सुखा नहीं सकता ।

जीवात्मा तीन देह से अलग है । फिर भी अज्ञान के कारण स्वयं भोक्त मानता है । जिस कारण देह के सुख दुःख को अपना मान लेता है । जोजो महात्मा श्रमस्मी अज्ञान से पर हो गये है, वे देह के सुख दुःख को अपना नहीं मानते । जैसे शतानन्द स्वामी, ऋषभदेवजी, शुकदेवजी, सच्चिदानंद स्वामी इत्यादि अनेक महापुरुष देह के सुख दुःख से विकारी नहीं हुए । हे भक्तों ! जीवात्मा को एक बार शास्त्रों द्वारा या महापुरुषो द्वारा ज्ञान हो जाय तो वह देह से अलग मूल स्वरूप को पहचान जाता है । तब जीवात्मा को अखंड आनन्द की अनूभूति होने लगती है ।

(क्रमशः)

जानने योग्य

१. समग्र भारत में "बी" नेगेटीव ग्रूप के डॉ. जयेन्द्रभाई दवे (चमडी रोग के निष्णांत) १०२ वार रक्तदान किये है । भारत में जो प्रथम रक्तदाता है ।
२. डॉ. गुणवंतभाई जे. पटेल (ओर्थोपेडीक सर्जन महेसाणा) १४४ बार रक्तदान किये हैं ।
३. श्री रमेशभाई ए.न ठक्कर (हेन्डीकेप) ५१ वार रक्तदान किये है ।
४. सूर्यकान्तभाई नायक (रेडकोर्स के आसि. डायरेकटर तथा श्री न.ना.यु. मंडल के सभ्य है) ७७ वार रक्तदान किये हैं ।
५. बाबूभाई जे. पटेल (सामाजिक कार्यकर तथा युवक मंडल के सभ्य हैं ७६ वार रक्दान किये है । २००५-०६ में रीलीजीयस रक्तदाता के रूप में (रक्तदान का पदक) श्री स्वामिनारायण मंदिर को गवर्नर श्री नवलकिशोर शर्मा के हाथों से एवोर्ड मिला हुआ है । २००२ से रेडकोर्स तथा प्रथमा का एवोर्ड लगातार अपने मंदिर को मिला है ।

- डॉ. रमेश परीख

सत्संग समाचार

सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव का चंदन के वस्त्रो में दर्शन

भरतखंड के राजाधिराज सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव, श्री धर्मभक्ति हरिकृष्ण महाराज श्री राधाकृष्णदेव और अक्षरभुवन श्री घनश्याम महाराज आदि देवों के अक्षय तृतिया के दिन से नित्य सुगंधीमान चंदन के विविध प्रकार के अद्‌भुत वस्त्रों के दर्शन किराये गये । ग्रीष्म ऋतु में इष्टदेव परात्पर परमात्मा के ऐसे दिव्य दर्शन करके जीव को एक प्रकार की शांति मिलती है । स्वयं श्रीहरि के द्वारा प्रस्थापित किए हुए स्वस्वरूप को निहार कर अंग-अंग और वस्त्रालंकार के दर्शन करते करते मूर्ति का अद्‌भुत अलौकिक स्वरूप हृदय में बैठ जाती है । तो अपना जीवन वास्तव में धन्य और मोक्षदायी बन जाता है । हम श्रीनगर वासी बहुत भाग्यशाली हैं कि नित्य देव दर्शन के साथ धर्मवंशी परिवार के भी दर्शन करके अति आनंदित हो जाते हैं । पूजारी ब्रह्मचरी संत बहुत ही श्रध्धा-भक्ति से ठाकोरजी के दिव्य चंदन के वस्त्रों का दर्शन करवाते हैं इस कारणसर श्रीहरि उन पर सदैव प्रसन्न हों ऐसी प्रार्थना । *- कोठारी धर्मप्रकाशदास*

मथुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और समस्त धर्मवंशी परिवार की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा महंत शास्त्री अखिलेश्वरदासजी की प्रेरणा से श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का पाटोत्सव वैशाख सुद-१० के दिन प.पू.अ.सौ. बडे गादीवालाश्री की शुभ उपस्थिति में प.भ.अ.नि. बिमलाबहन रमणलाल पटेल परिवार के श्री भूपेन्द्रभाई, श्री जीतुभाई, श्री हितेन्द्रभाई, रंजनबहन, शोभनाबहन और आरतीबहन की तरफ से धामधूम से मनाया गया ।

इस दिव्य प्रसंग पर प.पू. बडे गादीवालाने पधार कर यजमान परिवार की बहन आदि हरिभक्तों को दर्शन-आशीर्वाद का अलौकिक सुख दिया था । यजमान परिवार के बहनों ने प.पू. गादीवाला का पूजन अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे ।

प्रासंगिक सभा में ब्र. स्वा. वासुदेवानंदजी आदि संतो और स्वा. नारायणस्वरूपदासजी का मूक आशीर्वाद दिए थे ।

स्वा. धर्मकिशोरदासने महापूजा विधि करवाई थी । यहाँ निर्माण हुए भंडार, श्री व्रजेन्द्र यात्रिक भुवन (ए.सी.) का प.पू.अ.सौ. गादीवाला ने उद्‌घाटन करके अति प्रसन्न होकर अंत:करण से दिव्य आशीर्वाद दिए थे । इस प्रसंग पर हजुरी पार्षद वनराज भगत ने प.पू. बडे महाराजश्री के आशीर्वाद पत्र समाचार बताया था । और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने फोन द्वारा आशीर्वाद प्रदान किए ।

इस प्रसंग पर पूजारी सर्वेश्वर स्वामी आदि संत मंडल की सेवा प्रसंसनीय थी ।

- नरेन्द्र भगत

धोलाक के श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव धामधूम से मनाया गया

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के स्वहस्ते से प्रस्थापित किए हुए श्री मुरली मनोहरदेव हरिकृष्ण महाराज के १७१ वे वार्षिक पाटोत्सव के उपलक्ष में श्रीमद् सत्संगीजीवन कथापारायण आदि प्रसंग प.पू. बडे महाराजश्री तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशेलन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद और महंत स.गु. स्वामी जगतप्रसादजीकी प्रेरणा और महंत स्वामी विष्णुप्रसाददासजी के मार्गदर्शन से अ.नि.प.भ. हरिलाल नारायणदास ठक्कर तथा अ.नि. शारदाबहन हरिलाल ठक्कर (बावलावाले) के स्मरणार्थ उनके जमाई प.भ. रमेशबाई परसोत्तमदास ठक्करके परिवार की तरफ से पाटोत्सव धामधूम से मनाया गया । शास्त्री पूर्णप्रकाशदासजी गुरु शास्त्री स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी ने सुंदर मधुर वाणी मे कथामृत का लाभ प्रदान किया ।

वैशाख वद-५ ता. १८-५-०६ के दिन प्रात: ७-०० बडे श्रीहरि के छठ्ठे वंशज प.पू. महाराजश्री के वरद् हस्त से ठाकोरजी का महाभिषेक वेद विधिसर धामधुम से संपन्न हुआ ।

उसके बाद प्रासंगिक सभा में महंत स्वामी स.गु. जगतप्रकाशदासजी और विद्वान संतोने प्रासंगिक प्रवचन किया । पाटोत्सव के यजमान प.भ. रमेशभाई और उनके पिताश्री दासभाई और परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन-आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किए थे । श्री स्वामिनारायण म्युझियम में धोलका और धोलका देश के गाँवो के हरिभक्तों ने दो लाख से उपर की सेवा पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से की है । यजमान प.भ. रमेशभाईने पाटोत्सव की संपूर्ण सेवा, श्री स्वमिनाराण म्युझियम की सेवा, और श्री स्वामिनारायण मासिक के ५० आजीवन सभ्यों की सेवा महंत स्वामी जगतप्रकाशदासजी की प्रेरणा से हुई थी । जिन पर प.पू. बडे महाराजश्री बहुत प्रसन्न हुए थे ।

इस उत्सव के प्रसंग पर नारणघाट के महंत शा. घनश्याम स्वामी तथा उत्सव प्रसंग पर मूली से स.गु. हरिस्वरूप स्वामी, श्री राधाकृष्णदेव के पूर्व पूजारी जे.पी. स्वामी, भरत भगत, जेतलपुर के महंत के.पी. स्वामी, श्याम स्वामी, मूली से कोठारी चंदु भगत और अहमदाबाद स्कीम कमिटी के मेम्बर सेवानुरागी प.भ. रतीभाई खीमजीभाई पटेल (मेडावाले) प.पू. महाराजश्री के साथ दर्शनार्थ पधारे थे । हजारों भाविको ने दर्शन करके जीवन सफल किया था ।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, धोलका

श्री स्वमिनारायण मंदरि लालोडा (ता. ईडर) सुवर्ण जयंती महोत्सव धामधुम से मनाया

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की पूर्णकृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री

कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा भावि आचार्य लालजी महाराजश्री १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. शास्त्री स्वामी घनश्यामजीवनदासजी की शुभ प्रेरणा से और लालोडा गाँव के समस्त हरिभक्तों के सहयोग से निज मंदिर के ५० वर्ष पूर्ण होने के कारण सुवर्ण जयंती महोत्सव का धामधूम से आयोजन किया गया था। इस प्रसंग के उपलक्ष में ता. २९-४-०६ से ५-५-०६ पर्यन्त श्रीमद् भागवत कथा पारायण पू. पी.पी. स्वामी के वक्तापद पर सुंदर रम से सम्पन्न हुई थी। समूह महापूजा और श्री विष्णुयाग का भी विधिपूर्वक आयोजन किया गया था।

ता. ५-५-०६ के शुभ दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी पधारे थे। गाँव के तथा इडर देश के हजारो हरिभक्त तथा पू. शा.स्वा. घनश्यामजीवनदासजी तथा संत समुदाय ने स्वागतोत्सव किया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने मंदिर में सुवर्ण जयंती उत्सव पर ठाकुरजी की आरती उतारकर यज्ञ मंडप में पधारे थे। जहाँ पर अपने हाथों से यज्ञ की पूर्णाहुती की थी। उसके बाद सभा मंडप में व्यासजी की आरती उतारकर कथा की पूर्णाहुती की थी। सभा में विद्वान संतो ने प्रासंगिक प्रवचन किया। अंत में समस्त गाँव को तथा पू. घनश्याम स्वामी तथा उनके संत मंडल को प.पू. आचार्य महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिये थे। बहनो को दर्शन-आशीर्वाद देने हेतु प.पू. गादीवाला भी पधारी थी। सात सात दिन तक आगन्तुक आभ्यागतो के रहने खाने की सम्पूर्ण व्यवस्था की गयी थी। गाँव के हरिभक्त तन-मन-धन से उत्सव को मनाया था। इस उत्सव में स्वामी का मंडल, स्वामी मोहनप्रसादासजी, स्वा. विश्वप्रकाशदासजी, बालकृष्णदासजी तथा जेतलपुर मंदिर, नाथद्वारा, धोलका, अहमदाबाद के संतोने खूब सेवा का कार्य किया था। श्रीजी महाराज तथा धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री तथा परिवार अत्यन्त प्रसन्न हुए हैं।

- स्वा. विश्वप्रकाशदासजी

अरोडा गाँव में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

प.पू. बडे महाराजश्री तथा वर्तमान पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा ईडर के महंत स्वामी की प्रेरणा से पुराने अरोडा मे नूतन श्री स्वामिनारयण मंदिर का निर्माण पूर्ण होते ही मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायणका आयोजन किया था। जिस कथामृत का पान शा. स्वा. हरिजीवनदासजी (गांधीनगर) तथा शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजीने कराया था। सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया था। तीन दिन तका विष्णुयाग का भी आयोजन किया गया था।

ता. २-५-०६ के शुभ दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से वेद-विधूपूर्वक ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा की गयी थी। बाद में पूर्णाहुति की गयी थी।

विद्वान संतो ने प्रेरक प्रवचन किया था। बाद में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने संत हरिभक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था। गाँव भक्तजनोकी सेवा सराहनीय थी।

- साधु सत्यसंकल्पदास

पालडी-काकंज श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा

जेतलपुर श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज देश के अन्तर्गत पालडी-कांकज में प.पू.ध.धु. आचार्यमहाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से हरि मंदिर का नव निर्माण पूर्ण होते ही ता. १९-४-०६ से २१-४-०६ तक शा.स्वा. हरिओंमप्रकाशदासजी (जेतलपुर वाडी) ने श्रीमद् भागवत कथा का रसपान कराया था। विष्णुयाग की विधि राजूभाई शुक्ल ने की थी। ता. २०-४-०६ के दिन मूर्तियों की नगरयात्रा निकाली गयी थी।

ता. २१-४-०६ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से मंदिर में विराजमान ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा धामधूम पूर्वक की गयी थी। बाद में कथा तथा यज्ञ की पूर्णाहुति आरती उतारी गयी।

प्रासंगीक सभा में पू. पी.पी. स्वामी, घनश्याम स्वामी (नारायणघाट) आदि संतो ने प्रेरक प्रवचन किये। यजमान परिवार ने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके हार्दिक आशीर्वाद प्राप्त किया। अंत में समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने हार्दिक आशीर्वाद दिया सभा संचालन शा. भक्तिनंदनदासजीने किया। १०००० जितने भावुक हरिभक्तोंने प्रसाद ग्रहण किया था।

- शा. भक्तिनंदनदासजी, जेतलपुर

विसनगर श्री सहजानदं किशोर मंडल का दशाब्दी महोत्सव

श्री नरनारायणदेव गादी संचालित श्री सहजानंद किशोर मंडल के ११वें वर्ष में प्रवेश प्रसंग पर अहमदाबाद से श्री नरनारायणदेव गादी के भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद हाथों से श्रीहरिकृष्ण महाराजका महाभिषेक, समूह महा पूजावेद, विधि पूर्वक सम्पन्न हुई। जिसमें मंत्रीश्री अमीतभाई सथवारा ने मंडल को सुझाव दिया था।

इस मंडल द्वारा आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणीक इत्यादि प्रवृतिया चल रही है। सभा संचालन श्री चिंतनभाई कंसारा (प्रमुखश्री) ने मंडल की स्थिति बताते हुए कहा की इस समय मंडल की संख्या १९७ है।

प.पू. लालजी महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए बताया कि सभी मंडल के सदस्य शिक्षापत्री की आज्ञानुसार वर्तन करे। प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री पधारकर बहनों को हार्दिक आशीर्वाद दी। श्री धर्मदेवभाईने आभार विधि की थी।

- श्री न.ना.यु.मंडल, विसनगर

देलवाडा में मारुति प्राण प्रतिष्ठा

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा नारायणपुरा मंदिर के महंत शा. प्रेमस्वरूपदासजीकी प्रेरणा से देलवाडा गाँव में ता. १६-५-०६ से २०-५-०६ तक मारुतियज्ञ प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर रामायण, भागवत, श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा स.गु. प्रेमस्वरूपदासजीने की थी। इस प्रसंग पर बहनों के आमंत्रण पर ता. १६-५-०६ के

दिन प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वस्मा गादीवालाश्री पधारी थी । वे सत्संगी बहनों को आशीर्वाद दी थी ।

ता. २०-५-०६ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजाश्री पधारे थे । उस समय संत हरिभक्तों ने स्वागतोत्सव धूमधाम से किया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से कष्टभंजनदेव की प्राण प्रतिष्ठा वेद विधि से की गयी थी ।

सभा में १६ जितने विद्यार्थी बालक थे प्रेमस्वस्म स्वामीने कंठी बांधकर पूजा पेटी देकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री से आशीर्वाद दिलाया था । संचालन सेवा धानंजवाले श्री रमणभाई पटेल ने की थी ।

इस प्रसंग पर गांधीनगर से शा.हरिकेशवदासजी, जेतलपुर से शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी, जयदेवपुरा से स्वयं प्रकाशदास, स्वा. विश्वप्रकाशदासजी, नीलकंठ स्वामी ईत्यादि संत पधारे हुए थे ।

श्री तुलसीभाई, श्रीरमणभाई, श्री मणीभाई, श्री बाबुभाई, सोमाभाई आदि अनेक हरिभक्तोंने यजमानपद का लाभ लिया था । व्यसन मुक्ति कार्यक्रम डॉ. पी.एम. पटेल (नरनारायण होस्पिटल माणसा) ने किया । संत तथा सांख्ययोगी बहनो ने रसोई का सुंदर कार्य किया था । गाँव के सरपंच अमृतभाई तथा समस्त गाँव के लोगों ने खूब सहकार दिया । अंतिम दिन सभी आशन्तुं को ने प्रसाद ग्रहण किया । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया । श्री मणीभाई खांडावाला ने श्री स्वामिनारायण अंक के १२ आजीवन सदस्य बनाकर उत्तम सेवा का कार्य किया । अ.नि. पटेल कुबेरदास बालचंददास परिवार, अ.नि. पटेल द्वारकादास बालचंददास परिवार, अ.नि. पटेल बापूभाई उमेददास परिवार, जेशंकरभाई सांकलदास परिवार, मोहनदास पसोत्तमदास परिवारने सेवा का लाभ लिया था । विष्णुयाग के आचार्य श्री कीर्ति कृष्णलाल थे ।

- मणीभाई खांडवाला

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिरोही

राजस्थान के शिरोही शहर में श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २७-४-०६ के दिन श्री नरनारायणदेव के पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । उस समय उनका स्वागत धूमधाम से किया गया था । ता. २१-४-०६ के दिन प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद हाथों से षोडशोपचार विधि से हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक संपन्न हुआ । बाद में प.पू. आचार्य महाराजश्री मुरलीधरजी के मंदिर में आरती करने पधारे थे । राम झरोखा मैदान में श्रीहरि के चरित्रों की बात की थी । समस्त सभाजनों को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद दिया । हरिभक्तोने प.पू. महाराजश्री का पूजन अर्चन का लाभ प्राप्त किया था । अक्षर स्वामीने उत्तम आयोजन किया था ।

- महंतश्री

ओलपाड में प.पू. बडे महाराजश्री का प्रथम शुभागमन

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति श्रीहरि के अपर स्वस्म प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ता. ८-४-०६ के दिन हालार (मूलिदेश) के हरिभक्तों के अति आग्रह पर ओलपाड गाँव पधारे थे । प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर में दर्शनार्थ पधारे थे । वहाँ श्रीहरिकृष्ण महाराज की आरती उतारकर सभी को दिव्यलाभ दिये थे । हरिभक्त बडी संख्या में उपस्थित होकर धूमधाम से स्वागत किया था । जीरागढ के श्री शांतिलाल वरु तथा कानजीभाई पोरिया (जामसर)ने कार्यक्रम का आयोजन किया ।

प्रासंगिक सभा में संतो के प्रवचन के बाद प.पू. महाराजश्री ने आशीर्वाद देते हुए बताया की श्री नरनारायणदेव तथा लक्ष्मीनारायण देव देश गद्दी स्थानों को वफादार रहना और नियम, निश्चय, पक्ष छोडना नही । यहाँ के हालारी प्रजा के आत्यधिक प्रेम के कारण ही हम सुरत पधारे थे । यहाँ के काफी हरिभक्तों ने म्युझियम के लिए फाकी द्रव्यदान हेतु नाम लिखवाया था ।

- शांतिलाल वरु

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

उंटबेट सामपर (हालार) में श्रीमद् भागवत ज्ञान यज्ञ

श्री नरनारायणदेव गादी के और मूली श्री राधाकृष्णदेव देश के अन्तर्गत हालार के उंटबेट सामपर गाँव में श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशेलन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा मूली के वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध पूज्य स.गु. स्वामी बालकृष्णदासजी के मार्गदर्शन से तथा मूली मंदिर के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी ज्ञानवल्लभदासजी और महंत स.गु. स्वामी ओमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ता. २०-४-०६ से ता. २६-४-०६ पर्यन्त प.भ. मनाणी नरसींबाई करशनभाई के मुख्य अतिथि पद पर उनके पितृ मोक्ष के लिए श्रीमद् भागवत ज्ञानयज्ञ स.गु. शास्त्री स्वामी ज्ञानवल्लभदासजी (मूली महंतश्री) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई ।

दिनांक २५-४-०६ की प्रात: ७-०० बजे श्री नरनारायणदेव पीठाधिश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे तब समस्त गाँव और हजारो अतिथि हरिभक्तोने आनंद के अद्‌भुत क्षण प्राप्त किए । यजमान परिवार के प.भ. नरसीभाई के पुत्र श्री तुलसीभाई, श्री रमणभाई, श्री हीराभाई, श्री प्रविणभाई, और श्री महेशभाई आदि परिवारने सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन-आरती करके दिव्य आशीर्वाद प्राप्त किए थे । विद्वान संतो के प्रेरक प्रवचन के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सभी भक्तों को आशीर्वाद प्रदान किए ।

गाँव के समस्त हरिभक्तगण तथा धर्मप्रेमीजनो ने अत्याधिक सेवा सहकार प्रदान की । सात दिन तक अतिथियों को प्रसाद दिया गया ।

गाँव के मंत्री श्री प्रफुल्लभाई हरगोविंदभाई आदि सभी युवको की और सभी भक्तों की सेवा प्रशंसनीय थी ।

- काकुभाई पूर्व सरपंच उ.सामपर

विदेश सत्संग वृत्तान्त

कोलोनिया श्री स्वामिनारायण मंदिर

कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर के प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से दि. १६ अप्रेल के रविवार के दिन श्री हनुमान जयंती और प.पू. बडे महाराजश्री के ६२ वें प्राकट्योत्सव का भव्य आयोजन किया गया था ।

इस भव्य सत्संग सभा में अ.सौ. पू. बिन्दुराजा तथा उनके दोनों सुपुत्र श्री सुव्रतकुमार तथा श्री सौम्यकुमार पधारे थे । हरिभक्तों ने धून-भजन कीर्तन के बाद यहाँ के महंत स्वामी देवस्वामी ने धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की कृपा और आशीर्वाद प्राप्त करने का उपाय सुंदर दृष्टांत देकर बताया । और श्रीजी महाराज की लीला की कई बाते बताई । श्री रजनीभाई चोकसीने प.पू. बडे महाराजश्री के श्री स्वामिनारायण म्युझियम के प्रचार के लिए अमेरिका प्रवास की घोषणा की ।

प.पू. बडे महाराजश्री के ६२ वें प्राकट्योत्सव के प्रसंग पर उनकी तस्वीर के पूजन आरती में पू. बिन्दुराजा के साथ चि. सुव्रतकुमार और चि. सौम्यकुमार जुडे थे ।

२३ एप्रिल की सत्संग सभा में धून्य-भजन कीर्तन आदि हरिभक्तों और संतोने की । महंत स्वामी देवप्रसाददासजी और पी.पी. स्वामी के शिष्य शा. ईश्वर स्वामीने सत्संग सभा में श्री स्वामिनारायण म्युझियम के निर्माण की प्रवृत्ति की संपूर्ण माहिती प्रदान की । प.पू. बडे महाराजश्री ७ मी को यहाँ पधारने वाले है तो समस्त हरिभक्तों को उपस्थित रहने का निमंत्रण दिया गया ।

प.पू. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री संत-मंडल के साथ श्री स्वामिनारायण म्युझियम के प्रचार के लिए पधारे तब महंत स्वामी ईश्वरचरणधासजी और हरिभक्तों ने प.पू. बडे महाराजश्री का स्वागत उत्सव धामधुम से किया था ।

प्रथम प.पू. महाराजश्री ने मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारी । उसके बाद प्रासंगिक सभा में धून्य-कीर्तन आदि हरिभक्तों ने की ।

मंदिर के मुख्य होल में बडी स्क्रीन पर अहमदाबाद नारणपुरा विस्तार में निर्माण हो रहे श्री स्वामिनारायण म्युझियम की सीडी प्रदर्शित की गई । समग्र म्युझियम के प्रोजेक्ट तथा किस प्रकार इसमें योगदान दिया गया है उसकी माहिती और समग्र प्रक्रिया सीडी द्वारा हरिभक्तों को बतायी गयी । शा. ईश्वर स्वामी और न्युजर्सी के शास्त्री माधवप्रसाददासजीने श्री स्वामिनारायण म्युझियम के तमाम प्रक्रियाओं की माहिती सुंदरता से समझाई थी ।

प.पू. बडे महाराजश्री का भव्य स्वागत प्रमुखश्री नयनभाई परीख ने किया था । कमिटी की तरफ से श्री प्रविणभाई शाहने पुष्पहार से स्वागत किया था । पू. बिन्दुराजा और श्री प्रफुल्लकुमार का स्वागत हरिभक्त भाई-बहनोने क्रमशः किया था । सभा में प.पू. महाराजश्री ने श्री स्वामिनारायण म्युझियम में सत्संगीओ ने कि सेवा का उल्लेख किया ।

प.पू. बडे महाराजश्री ने ISSO के बडे दो चेप्टर बायरन और एटलान्टा की प्रगति देखकर मंदिर निर्माण करने का संकल्प घोषित किया उस समय हरिभक्त गण बहुत ही आनंदित हो उठे । श्री स्वामिनारायण म्युझियम के निर्माण में हरिभक्तों ने बडी संख्या में सहयोग किया था । इस प्रसंग पर महंत स्वामी देवप्रसाददासजी गुरु स्वामी जगतप्रकाशदासजी (मूलीवाले) ने सुंदर आयोजन किया था ।

"सेवा-मेडिकल केर" का आयोजन

प.पू. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के सानिध्य में मंदिर में भिन्न-भिन्न रोगो के निष्णांत डॉक्टर की टीम ९८ लोगों का मेडीकल चेकअप और डायोग्नेसीझ किया गया । डॉ. सुनील पटेल, डॉ. जय अमीन, डॉ. माया रघुवंशी, डॉ. चिराग पटेल, डॉ. हितेन्द्र पटेल, डॉ. पूनम पटेल, डॉ. जिग्नेश शाह, फार्मासीस्ट हरेश भट्ट, हरि पटेल और पलकुं पटेलने सेवा प्रदान की ।

प.पू. बडे महाराजश्री ने 'सेवा मेडीकल केर' की डॉक्टर की निःशुल्क प्रवृत्ति और संस्था की सामाजिक "सेवा" की प्रवृत्ति को प्रत्यक्ष देखकर बहुत प्रसन्न होकर प्रवृत्ति को अधिक वेग मिले ऐसे आशीर्वाद प्रदान किए । और ISSO के सभी चेप्टरो में प्रायः ऐसी प्रवृत्ति होती रहे ऐसा अनुरोध किया । हर महिने में दूसरे और चौथे रविवार को फ्री मेडीकल चेकअप किया जाता है ।

विशेष माहिती के लिए
ISSO सेवा मेडीकल बिल्डींग,
२२०, टेम्पल वे, कोलोनीया,
न्युजर्सी, ०७०६७
फोन : ७३२-६६९-१००८
धर्मी पटेल : २०१-९२१-८२८२
जस्मिना चोक्सी : २०१-८०५-६९९६
हरिकृष्ण पटेल : ९१७-६५८-७४९८

- प्रविणभाई शाह

शिकागो स्वामिनारायण मंदिर में परशुराम जयंती का उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा आशीर्वाद से महंत शा. स्वामी धर्मवल्लभदासजी की प्रेरणा से ता. ३०-४-०६ रविवार के अखातीज के रोज श्री परशुराम जयंती के शुभ दिन पर भगवान को भी परशुराम स्वरूप धारण करवाकर अलौकिक दर्शन पुजारी स्वामीने करवाए थे । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के उत्साही कीर्तनकारोने परशुराम जयंती के कीर्तन का गान किया था । महंत स्वामीने इस अवसर के माहात्म्य की कथा सुनाई थी । और प्रमुखश्री जगदीशभाई ने प.पू. पडे महाराजश्री के आशीर्वाद सभा में पढ़कर सुनाए थे । *- विष्णुभाई सोलावाले*

ह्युस्टन (टेक्सास) श्री स्वामिनारायण मंदिर

अपने ह्युस्टन श्री स्वामिनारायण मदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से और संत मंडल की प्रेरणा से ८ एप्रिल शनिवार के रोज २२५ वी श्री स्वामिनारायण जयंती धामधूम से सनाई गई ।

प्रातः ९ से १२ समूह महापूजा में सेंकडो

हरिभक्तोंने लाभ लिया था ।

दोपहर १२-०० बजे श्री रामचंद्रजी भगवान की जन्मोत्सव-आरती उतारी गई । दोपहर के १२ से शाम के ७ बजे तक अखंड धून्य और स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी के १०० पद का गान किया गया । बच्चों के लिए FUN DAY कार्यक्रम आयोजित किया गया था । २२५ पकवानों का ठाकुरजी को अन्नकूट किया गया । युवक मंडल की बहनों ने जीवुबा-लाडुबा के भगवान के प्रति भाव का नाटक प्रस्तुत किया ।

मुनि स्वामी ने सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगावन की महिमा-माहात्म्य सुनाया । रात्रि के १०-१० बजे श्री स्वामिनारायण भगवान के प्राकट्योत्सव की आरती धुमधाम से की गई । ज्ञान स्वामीने २२५ दीपकों की सुंदर रचनात्मक आरती बनाई थी । युवक मंडल, मुनि स्वामी, ज्ञान स्वामी और अन्य हरिभक्तों ने बहुत श्रध्धा से सेवा प्रदान की थी ।

- रमेशभाई टी. पटेल

वोशिंग्टन (डी.सी. ISSO चेप्टर)

८ एप्रिल शनिवार की शाम को तीन घंट तक सभा में भजन-कीर्तन के साथ वचनामृत का वाचन-नित्य-नियम और श्री रामचंद्रजी भगवान प्राकट्य आरती और सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की प्राकटोत्सव आरती उतारी गई । हरिभक्तो ने भी बडी संख्या में सभा में भाग लिया ।

प.पू.ध.धु. महाराजश्री की कृपा से सत्संग सभा की प्रवृत्ति सुंदर चल रही है ।

- कनुभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (UK)

लेस्टर में अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से दि. १७-४-०६ के दिन श्री रामनवमी - श्री स्वामिनारायण जयंती के समग्र दिन धून्य भजन कीर्तन आदि का कार्यक्रम किया गया । श्री उन्नतभाई पटेल, विनोदभाई, रमेशभाई, हरिशभाई, सुरेशभाई तथा रमेशभाई आदि इस प्रसंग के यजमान बने थे । तो १३-४-०६ के दिन श्री हनुमानजी जयंती की शाम को ६ से ८ बजे विधिवत पूजन आरती और हरिभक्तों ने समूह में हनुमान चालीसा आदि किया था ।

प्रमुखश्री जयंतीभाई पटेल ने आभार विधि की थी ।

ता. ३०-४-०६ के दिन प्रातः ६ से दोपहर के १२ तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून्य का आयोजन किया था । जिस के यजमान श्री बाबुभाई नानजीभाई सोढा परिवार थे । प्रासंगिक सभा में प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का आशीर्वाद पत्र प.भ. कानजीभाई मारवी ने पढ़कर सुनाया था । हरिभक्तोंने बडी संख्या में दर्शन और अखंड धून्य का लाभ लिया था ।

- हेमराजभाई चोटलीया

श्री स्वामिनारायण मंदिर सीडनी (ISSO ओस्ट्रेलीया)

सीडनी में अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशेलन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से ९ एप्रिल के रविवार के दिन श्री स्वामिनारायण भगवान का प्राकट्य उत्सव धामधूम से मनाया गया । श्री अंजलेशभाईने श्रीहरि की दिव्य अलौकिक लीला चरित्र का पान करवाया था । श्री व्रजमारु ने श्री रामचंद्रजी भगवान का गुणगान का पान करवाया था । श्री योगेशभाई और श्री निलेशभाई आजकी सभा के यजमान थे ।

ता. १६-४-०६ के दिन हनुमान जयंती के अवसर पर हनुमान चालीसा का पाठ किया गया । जिस के यजमान श्री तुषारभाई, श्री अर्जुनभाई, श्री योगेशभाई थे ।

२३ एप्रेलि की सभा में भगवान का कीर्तन-भजन-धून्य आदि किया गया । श्री मिथिल अंकितभाई दिक्षीतने यजमान पद का लाभ लिया थआ ।

३० एप्रिल की सभा में श्री भाविनभाई दहीया ने प्रातःपूजा की विधि सुंदर पध्धति से समझाई । श्री मीहीरभाई ठाकर परिवारने गायत्री यज्ञ का आयोजन किया था । ए.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग सुंदर चलता है ।

- तेजस बी. पटेल

अक्षरनिवासी संत हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर : सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में विगत ३५ वर्षों से सभा मंडप में सायंप्रातः नियमित कथा करने वाले स.गु. पुराणी स्वामी घनश्यामचरणदासजी ता. १४-५-०६ के दिन प्रातः ४ बजे श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है । जिनके अक्षरनिवास से श्री नरनारायणदेव देश में एक कथाधारक संत की कमी हुई है ।

अरोडा (ता. इडर) : प.भ. मगनलाल भगवानदास पटेल ता. ८-५-०६ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

बावला : प.भ. रामकृष्णभाई मोहनलाल पटेल ता. ५-५-०६ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है ।

बाकरोल (बुजुर्ग) : सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव गादी के निष्ठावान श्री विष्णुप्रसाददासजी के पिताश्री प.भ. भाईशंकरभाई डाह्याराम जानी ता. ८-५-०६ के दिन (८७ व्रष) श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।

अहमदाबाद : प.भ. सोनी मनसुखलाल मोहनलाल ता. २७-४-०६ के दिन श्रीजी महारजा का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं ।



लालोडा में कथा के वक्ता पू. पी.पी. स्वामी को आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्री ।



दौलतगढ (इडर) में प.पू. महाराजश्री की आरती उतारते हुए प.भ. भरतभाई पटेल ।



पूजारी स्वामी परमेश्वरदासजी गुरुपरंपराकी प्रसादीकी चीजे प.पू. बडे महाराजश्री को अर्पण करते हुए ।



धोलका मंदिर में ठाकुरजी के पाटोत्सव तथा अभिषेक कर दर्शन करते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।



ओलपाड में प.पू. बडे महाराजश्री पधारे तब मार्ग पर पुष्पवृष्टि करता सत्संगी युवक श्री निलकंठ ।



धोलका मंदिर में पाटोत्सव के यजमान प.भ. रमेशभाई ठक्कर परिवार प.पू. बडे महाराजश्री का पूजन करते हुए ।



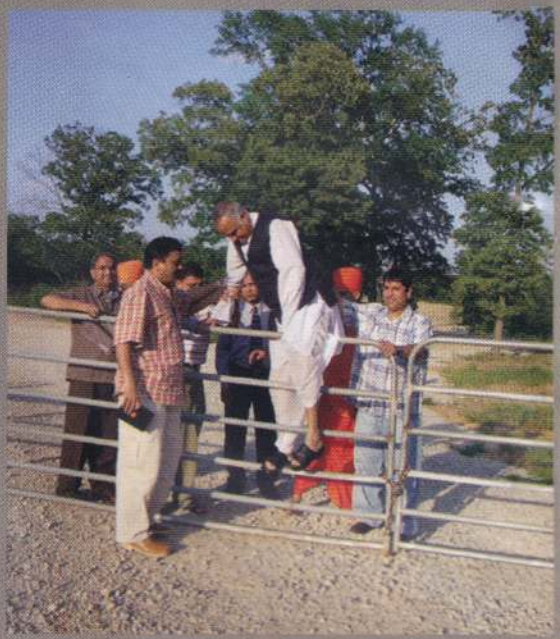


विसनगर श्री सहजानंद किशोर मंडल ११ वे वर्ष में प्रवेश किया तब के प्रसंग की सभा और स्वागत उत्सव में दर्शन देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।

SHREE SWAMINARAYAN REG. NO. GUJ.581 [redacted] Valid up to June 2006
permitted to Post AHME.P.S.O. On 11th of Every Month



मीडल ज्योंजीया में प.भ. नविनभाई पटेल के वहाँ पधारे प.पू. बडे महाराजश्री ।



प.पू. बडे महाराजश्री मीडल ज्योंजीया (अमरिका) में अपने मंदिर की जमीन देखने पधारे तब दरवाजे का ताला इस अद्‌भुत दर्शन के निमित्त बना ।

कोलोनीया के मंदिर में प.पू. बडे महाराजश्री के ६२ वें प्राकट्योत्सव के अवसर पर आरती उतारते प.पू.अ.सौ. बिन्दुराजा और श्री सुव्रतकुमार तथा श्री सौम्यकुमार और हरिभक्त ।





एटलान्टा में ISSO की नयी कमिटी की रचना करते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।



नेशविल (अमेरिका) में प.भ. कल्पेशभाई के पुत्र के जन्मदिवस पर केक खीला कर आशीर्वाद देते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।